जगार

शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय के जनसंपर्क इकाई और पत्रकारिता एवं जनसंचार अध्ययनशाला द्वारा प्रकाशित अर्द्धवार्षिक पत्रिका ई न्यूजलेटर उपलब्ध

प्रथम अंक – 1 | जुलाई–दिसंबर सत्र 2024–25 | बस्तर

किसी भी प्रश्न का हल देने से बचें

प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव, कुलपति एसएमकेवी, बस्तर

एक शिक्षक को विद्यार्थियों के साधारण प्रश्नों से नाराज नहीं होना चाहिए। विद्यार्थियों को अधिक से अधिक प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करना चाहिए। अगर विद्यार्थी मौलिक से भी नीचे स्तर के सवाल करते हैं तो शिक्षक को उसका हल बताते हुए इसे लेकर और वृहद अध्ययन करने की सलाह देनी चाहिए। स्टूडेंट्स को किसी प्रश्न का हल या उत्तर देने से यथासंभव बचना चाहिए। हल मिल जाता है तो विद्यार्थी प्रयास करना कम कर देते हैं। यदि हल सामने नहीं रहेगा तो स्टूडेंट्स उस प्रश्न का विभिन्न फार्मूले के साथ सॉल्व करने का प्रयास करेंगे।

साथ ही, अध्ययन–अध्यापन कार्य में विद्यार्थियों की तरह शिक्षक को भी अपने अंदर की सृजनात्मक शक्ति को बढ़ाने का प्रयास करना होगा। विद्यार्थियों के साथ अधिक से अधिक इंटरेक्शन होना चाहिए। हम जीवन में ऐसे अध्ययन–अध्यापन पर ध्यान दें जो न केवल रोजगार का अवसर दे बल्कि वास्तविक जीवन की समस्याओं को हल करने में भी काम आए।

(अंग्रेजी नववर्ष 2025 के मौके पर कुल. पति सर द्वारा दिए संदेश के कुछ अंश)

कालीपुर, जगदलपुर में प्रस्तावित विवि बिल्डिंग का लेआउट

बस्तर विश्वविद्यालय :17 वर्षों का स्वर्णिम सफर

विवि कैंपस। बस्तर जैसे सुदूर जनजातीय क्षेत्र में शिक्षा और अनुसंधान के लिए संकल्पित शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय विकास की ओर अग्रसर है। स्थापना के 17 वर्षों में इस विवि ने कई उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की है।

शासकीय व प्राइवेट के 50 से अधिक महाविद्यालय विवि से सम्बद्ध हैं। विवि ने इस सत्र से स्नातक और स्नातकोत्तर में सभी नियमित व स्वाध्यायी पाठ्यक्रमों में एनईपी 2020 लागू किया है। यूटीडी में करीब 30 विषयों में यूजी व पीजी कोर्स सेमेस्टर पद्धति से संचालित है। इसमें 22 इसी सत्र में प्रारंभ हुए हैं। फॉरेस्ट्री और वाइल्ड लाईफ और एंथ्रोपॉलोजी में शोध कार्य हो रहे हैं। सभी कोर्स में एनईपी के वेल्यू ऐडेड कोर्स(वीएसी), जनरल इलेक्टिव(जीई) और स्किल डेवलपमेंट कोर्स(एसईसी) की नियमावली और विषय बनाकर अध्यापन और प्रशिक्षण का कार्य हो रहा है। स्वाध्यायी(प्राइवेट) स्टूडेंट्स के लिए एनईपी लागू किया गया है।

हायर एजुकेशन के संबंधित हर आदेश को यहां मूर्त रूप दिया गया है। अभी इंफ्रास्ट्रक्चर कम होने के बावजूद सुबह आठ बजे से कक्षा संचालित कर क्लास मैनेज किए जा रहे हैं। यह विवि पीएम उषा के तहत मल्टीडिसिप्लीनरी एजुकेशन एवं अनुसंधान विश्वविद्यालय के रूप में चिन्हित किया गया है। अभी पीएम उषा के तहत विवि को सौ करोड़ का अनुदान भी प्राप्त हुआ है।

देश के कई प्रसिद्ध शैक्षणिक संस्थानों से विवि ने एकेडमिक सुविधा आदान–प्रदान के लिए एमओयू भी किए हैं। छात्रावास की व्यवस्था की गई है। जरूरत पड़ने पर पास के मॉडल कॉलेज में साइंस के विद्यार्थियों के लिए प्रैक्टिकल की व्यवस्था की जा रही है। एक्स्ट्रा कैरिकुलम के लिए कई क्लब बनाए गए हैं। इसमें योग व ध्यान क्लब, संस्कृत व भारतीय ज्ञान परंपरा क्लब जैसे प्रयास भी हैं।

गौरतलब है यह विवि जनजातीय बहुल क्षेत्र में है। इसलिए विवि ने आईकेएस की तरह ट्राइबल नॉलेज सिस्टम के लिए भी पहल की है। इस जनजातीय क्षेत्र में लोग अभी परंपरागत संस्कृति में जी रहे हैं। उनकी जीवनशैली व संस्कृति में कई पारंपरिक विज्ञान की उपस्थिति है। उनकी अस्मिता की रक्षा करना भी विवि ने अपना कार्य माना है।

देश के सुंदर युनिवर्सिटी में एक होगा शमक विवि : श्री प्रसन्ना

विद्यार्थियों के साथ उच्च शिक्षा सचिव की परिचर्चा

विश्वविद्यालय। कॉलेजों के प्राचार्यों की समीक्षा बैठक में शामिल होने जगदलपुर पहुंचे उच्च शिक्षा के सचिव श्री प्रसन्ना आर. ने 13 दिसंबर को विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के साथ परिचर्चा की। इस दौरान श्री प्रसन्ना ने विद्यार्थियों को समय के अनुसार अध्ययन करने और सफल होने की रणनीति को लेकर प्रोत्साहित किया।

इस अवसर पर श्री प्रसन्ना ने कहा कि विद्यार्थी केवल सरकारी नौकरी को ध्यान में रखकर पढ़ाई न करे बल्कि अपने कौशल को बढ़ाकर बिजनेस, इंटरप्रयोनरशिप, स्टार्टअप इत्यादि क्षेत्र में भी आगे बढ़ने का प्रयास करें। विद्यार्थी अधिक से अधिक प्रैक्टिल नॉलेज और स्किल सीखने की कोशिश करें, तभी वे जॉब मार्केट के अनुरूप वैल्युयेबल हो सकेंगे। श्री प्रसन्ना ने विभिन्न अध्ययनशालाओं के विद्यार्थियों को मंच पर बुलाकर उनकी जरूरतें और सुझाव जानीं। कई मांगों पर शीघ्र विचार कर उसे पूरा करने का आश्वासन दिया।

श्री प्रसन्ना ने बताया कि बस्तर में उच्च शिक्षा में सुधार करना शासन की वरीयता कार्य में है। इस विवि में टीचिंग और नॉन टीचिंग के करीब 400 पदों की भर्ती किए जाने का प्रयास किया जा रहा है। लाईब्रेरी, मेंटरशिप और सॉफ्ट स्किल पर ध्यान दिया गया है। श्री प्रसन्ना ने बताया कि अगले दो–तीन वर्षों में यह विवि देश के सबसे सुंदर राजकीय विश्वविद्यालयों में से एक होगा। सर्वसुविधायुक्त कैंपस बनाने की तैयारी की जा रही है। इसके लिए टेंडर इत्यादि की प्रक्रिया चल रही है। विवि के दोनों कैंपस के बीच इंटर कनेक्टिविटी के लिए ई रिक्शा भी चलाने की योजना है।

श्री प्रसन्ना ने आगे कहा कि सही फीडबैक मिलेगा तभी हमलोग सही काम कर सकेंगे। बिना फीडबैक के कोई सुधार और नव प्रयास संभव नहीं होता है। विद्यार्थियों से बातचीत के बाद श्री प्रसन्ना ने विवि के अतिथि व्याख्याताओं से भी बातचीत की। श्री प्रसन्ना ने इस दौरान एकेडमिक सत्र संबंधी सुझाव दिए। उपस्थित अतिथि व्याख्याताओं ने प्रदेश में अतिथि व्याख्याता से संबंधित नए प्रावधानों के लिए श्री प्रसन्ना के प्रति आभार जताया।

कुलपति प्रो. एमके श्रीवास्तव ने कहा कि इस क्षेत्र के विद्यार्थी भी निर्भय होकर अपनी बात रखने की क्षमता रखते हैं। उनकी मांगों पर विवि बहुत तेजी से काम कर रहा है। इस सत्र में कई नए पाठ्यक्रम प्रारंभ किए गए हैं। अगले सत्र में और भी बेहतर करने का प्रयास किया जाएगा। स्टूडेंट्स की छोटी–से छोटी दिक्क्तों को हल करने का प्रयास हो रहा है। सुदूर क्षेत्र के विद्यार्थियों के लिए छात्रावास भी व्यवस्थित किए गए हैं।

प्रो. श्रीवास्तव ने बताया कि बस्तर क्षेत्र में उच्च शिक्षा के सपनों को साकार करने के लिए विवि के नव निर्माण में सौ करोड़ की संस्तुति दिलाने में श्री प्रसन्ना सर का योगदान प्रेरणीय है। इस परिचर्चा कार्यक्रम में कुलसचिव डॉ. राजेश लालवानी, डॉ. शरद नेमा, डॉ. आनंद मूर्ति मिश्रा, डॉ. विनोद कुमार सोनी, डॉ. सजीवन कुमार, डॉ संजय कुमार डोंगरे, डॉ डीएल पटेल, विभिन्न शाला के अतिथि व्याख्याता और बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित थे।

पारंपरिक व्यवसाय में इनोवेशन विकसित भारत के लिए बहुत जरूरी : श्रीमती डडसेना

वाणिज्य अध्ययनशाला में विशेष व्याख्यान आयोजित

एसएमकेवी। वाणिज्य अध्ययनशाला में 27 सितंबर 2024 को विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। 'चैलेंजेज एंड रोल ऑफ जीडीपी फॉर विकसित भारत 2047' विषय पर आयोजित व्याख्यान में शासकीय काकतीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में वाणिज्य विभाग की विभागाध्यक्ष दीपिका डडसेना ने कहा कि जब देश का हर आाम आदमी विकसित होगा तभी हमारा देश विकसित होगा। इसी उद्देश्य से इन्टरप्रन्योरशिप, स्टार्ट अप पर जोर दिया जा रहा है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति(एनईपी) 2020 में स्किल इनहैन्समेंट कोर्स लागू किया गया है। आज पारंपरिक व्यवसाय को इनोवेशन से जोड़कर काम किया जा रहा है। यह विकसित भारत के बहुत जरूरी है। गांवों और छोटे शहरों में पारंपरिक व्यवसाय जीवन के आर्थिक आधार हैं। श्रीमती डडसेना कहा कि विकसित

भारत का मतलब है समृद्ध भारत है। हमारे देश के लिए पर्यावरण को नुकसान पहुंचाकर कोई आर्थिक लक्ष्य पाना फायदेमंद नहीं होगा।

सरकार ने विकसित भारत के लिए युवा, महिला, गरीब और किसान रूपी चार क्षेत्र के आधार पर अर्थव्यवस्था मजबूत करने का निर्णय लिया है। सन 2047 तक हमारे देश को विकासशील भारत से विकसित भारत तक का सफर तय करना है। देश की अर्थव्यवस्था को 50 ट्रिलियन यूएस डॉलर तक ले जाना है। इसके लिए हमें अर्थव्यवस्था के हर स्तर पर काम करना होगा। सभी नागरिक को व्यक्तिगत रूप से आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास करना होगा।

श्रीमती डडसेना ने बताया कि देश की सीमा के अंदर गुड्स और सर्विस की मॉनिटरी वैल्यू को जीडीपी कहते हैं। यह देश की इकॉनामी का इंडिकेटर होता है। जिससे न केवल देश की उन्नति प्रदर्शित होती है बल्कि इससे ही एक देश दूसरे देश से तुलना करते हैं। उन्होंने बताया कि आज हम भले जीडीपी में अमरीका, चीन, जर्मनी और जापान के बाद पांचवे नंबर पर हैं पर प्रति व्यक्ति आय से सबंधित जीडीपी में हमारा देश विश्व में 176वें स्थान पर हैं। हमें प्रति व्यक्ति आय बढ़ाने पर जोर देना होगा तभी जीडीपी का वास्तविक लाभ दिखेगा।

उद्बोधन के दौरान श्रीमती डडसेना ने नॉमिनल व रीयल जीडीपी में अंतर, जीएनपी, एनएनपी, आईएमएफ, एनएफआई, जीवीए जैसे आर्थिक विषयों को विद्यार्थियों को व्यवहारिक व सरल शब्दों में बताया। उन्होंने बताया कि सरकार ने रीयल जीडीपी के लिए ही कई स्कीम पर काम शुरू किए हैं। गरीबी मापन के भी पैमाने और आधार को व्यवहारिक स्वरूप दिया जा रहा है। इसी कारण आज लोग आर्थिक नीतियों में रूचि भी लेने लगे हैं। प्रत्यक्ष कर और अप्रत्यक्ष कर पर बात करने लगे हैं। विभागाध्यक्ष डॉ. सुकृता तिर्की के मागदर्शन में आयोजित कार्यक्रम का संचालन अतिथि व्याख्याता शैली पटेल ने किया और आभार प्रर्दशन अतिथि व्याख्याता राहुल सिंह ने किया। व्याख्यान कार्यक्रम में विभिन्न अध्ययनशालाओं के अतिथि व्याख्याता और विद्यार्थी उपस्थित रहे।

पत्रकारिता डिप्लोमा स्टूडेंट्स को भी मिले पोस्ट मैट्रिक स्कॉलरशिप

विवि न्यूज। पत्रकारिता के विद्यार्थियों को पोस्ट–मैट्रिक स्कॉलरशिप नहीं मिलता है। संबंधित पोर्टल में विवि के अधिकतर पाठ्यक्रम जुड़े हैं पर उसमें पीजीडीजेएमसी नहीं है। इस कारण इस पाठ्यक्रम के स्टूडेंट्स स्कॉलरशिप के लिए आवेदन नहीं कर पाते हैं। परिणामस्वरूप इस पाठ्यक्रम में बहुत कम स्टूडेंट्स प्रवेश लेते हैं।

फीस अधिक होने के कारण आर्थिक रूप से गरीब स्टूडेंट्स प्रवेश नहीं ले पाते हैं। दो सेमेस्टर में करीब 17 हजार फीस देने होते हैं। जबकि पीजी कॉलेज भानुप्रतापपुर में जनभागीदारी से संचालित कुशाभाऊ ठाकरे विवि से सम्बद्ध बीएजेएमसी के स्टूडेंट्स को स्कॉलरशिप मिलता है। अपने विवि में पीजीडीसीए स्टूडेंट्स एवं निजी विवि के डिप्लोमा स्टूडेंट्स को स्कॉलरशिप मिलते हैं। पीजीडीजेएमसी को भी स्कॉलरशिप पोर्टल में जुड़वाने का प्रयास किया जाना चाहिए। ताकि अगले सत्र में स्कॉलरशिप की सुविधा बताकर विद्यार्थियों को इसे कोर्स में प्रवेश दिलाया जा सके। इस सत्र में जुड़ जाए तो फरवरी 2025 तक पात्र पीजीडीजेएमसी स्टूडेंट्स स्कॉलरशिप भर लेंगे।

बस्तर रेड रन में शामिल हुए एमएसडब्ल्यू के स्टूडेंट्स व फैकल्टी

विवि समाचार। विश्व एड्स दिवस के अवसर पर एक दिसंबर को चेतना चाइल्ड एंड वूमेन वेलफेयर सोसायटी द्वारा बस्तर रेड रन नाम से मैराथन दौड़ का आयोजन किया गया। जिसमें विश्वविद्यालय के समाज कार्य(एमएसडब्ल्यू) अध्ययनशाला के छात्र–छात्राओं एवं फैकल्टी मेंबर ने भी हिस्सा लिया।

मैराथन शहर के दन्तेश्वरी मंदिर से प्रारंभ होकर मालती चौक, एसबीआई बैंक चौक, चांदनी चौक होते हुए वापस दन्तेश्वरी मंदिर पहुंचकर समाप्त हुआ। आयोजकों ने नुक्कड़ नाटक एवं क्विज द्वारा भी लोगों को एचआईवी रोकथाम जागरूकता हेतु संदेश दिए।

विवि स्टूडेंट्स का नेतृत्व कर रहीं डॉ. तूलिका शर्मा ने बताया कि इस रेड रन मैराथन का उद्देश्य महज एक दौड़ नहीं था बल्कि सोसाइटी में एचआईवी रोकथाम के

प्रति लोगों में जागरूकता संदेश देने कदम बढ़ाना था ताकि समाज इस रोग से बच सके। एमएसडब्ल्यू विभागाध्यक्ष डॉ. सुकृता तिर्की के मार्गदर्शन में अतिथि व्याख्याता श्रद्धा डोंगरे व एलिस एंजिल तिर्की भी मैराथन में हिस्सा लिया। विद्यार्थियों में रजमान बघेल, कंचन, वैभव, सुमन, बसन्ती, संगीता, रुचि, सुनीता, युक्ति, राधिका, दीपिका, निकिता, लीना, रुख्मी, निखिल शामिल हुए।

जरूरत है विश्वविद्यालय पर्यावरण वीर की

विवि कैंपस समाचार। एसएमके विवि के नए बिल्डिंग के आसपास लगे नवजात पौधे की सुरक्षा और देखभाल के लिए पर्यावरण प्रेमी स्टूडेंट्स की आवश्यकता है। स्टूडेंट्स को कोई एक–दो पौधे गोद लेकर उसे एक दो सेशन तक जिंदा रखने के प्रयास करने होंगे।। कम से कम सप्ताह में एक बार एक पेड़ में एक बॉटल पानी ही देकर यह जिम्मेदारी निभाया जा सकता है। पुरस्कार के रूप में आत्मसंतोष मिलेगा। इस कार्य में सहयोग के लिए एमसीए बिल्डिंग में संपर्क किया जा सकता है।

पत्र–पत्रिका पढे एवं ईनाम पाए

कुछ अच्छी साहित्यिक पत्रिकाएं अपने विवि के लाइब्रेरी में भी उपलब्ध हैं, जो पठनीय हैं। जो विद्यार्थी और अन्य उक्त साहित्यिक पत्रिकाओं को पूरा पढ़कर 20 से 50 वाक्य लिखकर पत्रकारिता अध्ययनशाला भेजेंगे। उन्हें हर अंक की पाठ्यता के लिए ६ 101 से पुरस्त किया जाएगा। (मैगजीन रीडरशिप प्रोत्साहन प्रयास की ओर से) 'नियम व शर्ते लागू हैं। इसके लिए 7587096232 पर संपर्क किया जा सकता है। आप संबंधित पत्रिका के वेबसाईट से पढ़कर भी फीडबैक दे सकते हैं।

केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय के कार्यक्रम से ऑनलाइन जुड़े विवि के सदस्य

कैंपस न्यूज। विवि और कॉलेज में नियुक्ति और पदोन्नति के लिए जारी नए मसौदे के संबंध में आयोजित ऑनलाइन कार्यक्रम में विवि के भी अधिकारी–कर्मचारी जुड़े। इस अवसर पर शिक्षा मंत्री धमेंद्र प्रधान ने कहा कि आज के तकनीकी युग में बदलाव की उम्र छोटी हो गई है। यूजीसी देश के विश्व. विद्याालयों में मानकों का समन्वय करता है। यूजीसी आज शिक्षा के क्षेत्र में विश्वास का केंद्र है। पिछले तीन वर्षों में यूजीसी ने 45 रिफार्म लाए हैं। श्री प्रधान ने कहा कि इतिहास भविष्य का दर्पण होता है। हम नालंदा, बिक्रमशिला, तक्षशिला जैसे विश्व. विद्यालय भले निर्माण नहीं कर पाएं पर हमें उस तरह के मूल्य को अपनाने के प्रयास करने होंगे। श्री प्रधान ने कहा कि शिक्षा विभाग ने गवर्नेंस प्रकिया का नया मॉडल बनाया है। पारदर्शिता पर विशेष ध्यान दिया गया है। इस अवसर पर पुष्पगिरी हॉल का शुभारंभ हुआ। आयोजन में प्रो. शरद नेमा, प्रो. स्वपन कुमार कोले, डॉ. वीके सोनी, डॉ. संजय डोंगरे ऑनलाइन जुड़े।

हेल्थ केयर टूरिज्म का केंद्र बन सकता है भारत

विश्वविद्यालय समाचार। विश्व पर्यटन दिवस के अवसर पर इतिहास अध्ययनशाला द्वारा इको टूरिज्म विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में उपस्थित कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि विश्व में भारत हेल्थ केयर टूरिज्म का बड़ा केंद्र बन सकता है। इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किए जाने की आवश्यकता है। गुजरात और राजस्थान जैसे राज्यों में विदेशी पर्यटक अधिक आ रहे हैं वहीं उत्तर प्रदेश में धार्मिक पर्यटन सभी को आकर्षित कर रहा है। कई राज्य पर्यटन के क्षेत्र में अच्छा कार्य कर रहे हैं। बस्तर सहित पूरे छत्तीसगढ़ में पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं।

प्रो. श्रीवास्तव ने बताया कि अभी देश में पर्यटन का जीडीपी में करीब छह प्रतिशत है जिसे नौ प्रतिशत तक बढ़ाने का प्रयास करना होगा। आयोजन में डॉ सजीवन कुमार उपस्थित थे। डॉ. भेनु और डॉ. वीपी सिंह कार्यक्रम में सक्रिय रहे।

सांस्कृतिक प्रतिभाओं का अंतरमहाविद्यालयीन युवा उत्सव

माननीय विधायक जी की उपस्थिति में योग क्लव का उद्घाटन

नृत्य व गायन के अतिरिक्त फोटोग्राफी, क्विज, रंगोली की भी हुई स्पर्धा

विश्वविद्यालय संवाददाता। विश्वविद्यालय में पांच दिसंबर को अंतर महाविद्यालयीन सांस्कृतिक युवा उत्सव का भव्य आयोजन किया गया। इस आयोजन ने न केवल स्थानीय सांस्कृतिक प्रतिभाओं को मंच प्रदान किया बल्कि विद्यार्थियों के कौशल और रचनात्मकता को भी प्रोत्साहित किया।

कार्यक्रम का उद्घाटन स्थानीय विधायक किरण सिंह देव, महापौर सफीरा साहू और कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव की गरिमामयी उपस्थिति में हुआ। विभिन्न कॉलेजों से आए प्राध्यापकों और विद्यार्थियों ने कार्यक्रम को अपनी उपस्थिति से विशेष बना दिया।

विधायक किरण सिंह देव ने अपने प्रेरणादायक संबोधन में छात्रों को उनके उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि छात्र जीवन हर व्यक्ति के जीवन का सबसे अच्छा समय होता है। इसी समय से अनुशासन और समर्पण का विकास होता है, जो उन्हें कलेक्टर, आईपीएस, और आईएएस बनने की दिशा में प्रेरित करता है।

उन्होंने जेनेरेशन फास्ट की चर्चा करते हुए युवाओं से अपील की कि वे अपने कार्यों से माता–पिता, शिक्षकों और देश का गौरव बढ़ाएं। महापौर सफीरा साहू ने विश्वविद्यालय की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह ग्रामीण अंचल के विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराता है और उनके सपनों को साकार करने में सहायक है।

कार्यक्रम में योग एवं ध्यान केंद्र का उद्घाटन भी किया गया, जिसे विधायक किरण सिंह देव ने विद्यार्थियों के मानसिक और शारीरिक विकास के लिए एक महत्वपूर्ण कदम बताया। इस केंद्र में छात्रों और विश्वविद्यालय के सभी सदस्यों को योग और ध्यान का प्रशिक्षण दिया जाएगा।

कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव ने अपने संबोधन में कहा कि भारत में युवाओं की शक्ति और क्षमता को पहचानने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू की गई है। ऐसे कार्यक्रम छात्रों के समग्र विकास में सहायक होते हैं, जिससे वे विकसित भारत में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकें। आज भारत में मेन वर्कफोर्स से ज्यादा वूमन वर्कफोर्स है। वर्किंग ऐज पॉपुलेशन भारत में सबसे ज्यादा है और ये युवा ही है। इस तरह के कार्यक्रम से विद्यार्थियों के कौशल का विकास होता है। ऐसे कार्यक्रम का उद्देश्य युवाओं को वेल राउंडेड बनाना है ताकि वे विकसित भारत में अपना योगदान दे सके।

सांस्कृतिक युवा उत्सव आयोजन के समन्वयक डॉ. आनंद मूर्ति मिश्रा के मार्गदर्शन में दंतेश्वरी महिला महाविद्यालय जगदलपुर, ध्रुर्वाराव माड़िया महाविद्यालय भैरमगढ़, शहीद हरचंद नाईक महाविद्यालय तोकापाल, नवीन महाविद्यालय कोण्डागांव, मॉडल कॉलेज गीदम, इंद्रावती कॉलेज आदि विभिन्न कॉलेजों के विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रतियोगिताओं में लोकनृत्य, गायन, क्विज, तात्कालिक भाषण, वाद–विवाद, पेंटिंग, रंगोली, फोटोग्राफी, मेहंदी, इंस्टालेशन जैसे आयोजन शामिल रहे।

इन प्रतियोगिताओं के निर्णायक मंडल में बादल संस्था के विशेषज्ञ शामिल थे, जिनमें श्री भरत कुमार गंगादित्य, श्रीमती स्मृति पाढ़ी, गरिमा नाग, पी यादव शामिल थे। कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को अपनी रचनात्मकता और प्रतिभा दिखाने का अवसर प्रदान करना, साथ ही उनकी क्षमता को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने की प्रेरणा देना है। कार्यक्रम का संचालन डॉ. दिलेश जोशी ने किया।

पुरातन समाज में भी महिलाओं का मान–सम्मान थाः प्रो दीक्षित

महारानी पुण्यश्लोका अहिल्याबाई के प्रजावत्सल जीवन पर संगोष्ठी आयोजित

विश्वविद्यालय। लोकमाता महारानी अहिल्याबाई होलकर ने अपने लिए नहीं बल्कि प्रजा के लिए जीवन जीया। तमाम पारिवारिक कष्ट झेलकर लोक के लिए संघर्ष किया। राज्य की राजधानी में वस्त्र उद्योग प्रारंभ कर रोजगार इत्यादि के लिए कई प्रयास किए। केदारनाथ से लेकर रामेश्वरम तक कई मंदिरों का जीर्णोद्धार और नवनिर्माण कराए। उनका पूरा जीवन प्रजा कल्याण के लिए समर्पित था। इसलिए पुण्यश्लोका कहलाईं।

उक्त विचार हेमचंद विश्वविद्यालय, दुर्ग के पूर्व कुलपति प्रो. एनपी दीक्षित ने व्यक्त किए। वे महारानी अहिल्याबाई होलकर की 300वीं जन्म जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में 09 जनवरी 2025 को विश्वविद्यालय में आयोजित विचार संगोष्ठी में बतौर मुख्य वक्ता संबोधित कर रहे थे। प्रो. दीक्षित ने बताया कि प्रजा के हित में महारानी अहिल्याबाई छोटे से घर में सामान्य जैसा जीवन व्यतीत किया। आदि गुरू शंकराचार्य की तरह देश की सांस्कृतिक एकता के लिए अद्वितीय काम किया।

विधवा होने के बाद देवी अहिल्याबाई ने प्रजाहित में राज संभाला और अपने उल्लेखनीय कार्यों से प्रजावत्सल कहलाईं। अपनी न्यायप्रियता, दानवीरता और उदारता के लिए प्रसिद्ध अहिल्याबाई जनता के हित में कई कठोर निर्णय भी लिए। प्रो. दीक्षित ने कहा कि विदेशी आक्रांताओं के आने के कारण देश में सती प्रथा और जौहर जैसी सामाजिक समस्याएं थी। उस समय के मालवा के राजा ने अपनी बहु लोकमाता अहिल्याबाई को न्यायप्रक्रिया, कूटनीति और युद्धनीति में साथ लिया। यह उस समय समाज में महिलाओं के सम्मान को दर्शाता है।

प्रो. दीक्षित ने बताया कि लोकमाता की प्रतिष्ठा, मान्यता और प्रभाव इतनी थी कि विरोधी राज्य भी अपने यहां उनसे मंदिर निर्माण और जीर्णोद्धार करवाने से नहीं रोक पाए। उस समय के राजाओं ने अबला समझकर उनपर आक्रमण करने की कई योजना बनाई लेकिन अहिल्याबाई ने उसका हर तरह से सामना किया। इसके लिए युद्ध के साथ कूटनीति का भी सहारा लिया।

विवि के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ शरद नेमा ने कहा कि लोकमाता का संपूर्ण जीवन संघर्षपूर्ण रहा। सभी को समान समझते हुए उन्होंने जन कल्याण के लिए कई काम किए। लोकमाता मानव के साथ पशुओं के प्रति भी उदार थीं। न्याय के लिए समान व्यवहार रखा। कुलसचिव डॉ. राजेश लालवाणी ने कहा कि भारत की धरा का गरिमामयी इतिहास रहा है। कई वीरों और संतों ने इस धरती पर जन्म लिया है। प्रजावत्सल देवी अहिल्याबाई का पूरा जीवन प्रेरणादायक है। कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. सजीवन कुमार ने अपने स्वागत उद्बोधन में कहा कि केंद्र सरकार ने अतीत के गौरवांवित पलों को महसूस कराने के लिए ऐसे आयोजन समय–समय पर कराने का निर्णय लिया है। जिसके माध्यम से हम सभी को अपने अतीत को जानने और बताने का अवसर मिले। कार्यक्रम का संचालन डॉ. भुनेश्वर लाल साहू ने किया। आभार उद्बोधन डॉ. सोहन कुमार मिश्रा ने दिया। कार्यक्रम में वनवासी कल्याण आश्रम के संतोष परांजपे, प्रो. शकील अहमद, डॉ. वीके सोनी, डॉ. संजय डोंगरे सहित अन्य उपस्थित थे। आयोजन में डॉ. दुर्गेश डिक्सेना व हरीश रामटेके ने सक्रिय सहयोग किया।

बस्तर ब्यूटी इज आवर ड्यूटी

विवि। स्वच्छता अभियान में अपना योगदान देने के उद्देश्य से कामर्स अध्ययनशाला के विद्यार्थियों ने 21 नवंबर को पर्यटन स्थल चित्रकोट(मिनी गोवा) में सफाई कार्य किए। हर सप्ताह दो घंटे स्वच्छता अभियान चलाने के नैतिक कर्तव्य के तहत और लोगों को स्वच्छता के प्रति प्रेरित करने के लिए विद्यार्थियों ने 'बस्तर ब्यूटी इज आवर ड्यूटी' नाम से यह स्वच्छता अभियान चलाया। इस दौरान विद्यार्थियों पानी बॉटल, पॉलिथिन, रैपर इत्यादि को पर्यटन स्थल से हटाया। विभागाध्यक्ष सुकृता तिर्की के निर्देशानुसार टीम का नेतृत्व अतिथि व्याख्याता राहुल कुमार सिंह एवं शैली पटेल ने किया। इस अभियान में रोहित, कल्प, आदित्य, डॉली, हर्षिता, मंदिशा, ज्योति, तबस्सुम, विवेक, नरेश, सुशांत आकृति सहित 25 विद्यार्थी थे।

दो अतिथि व्याख्याताओं ने यूजीसी नेट में पाई सफलता

डॉ. बीएल साहू

निशा भोई

विवि। यूनिवर्सिटी में आयोजित निःशुल्क कोचिंग की सहायता से यूजीसी नेट परीक्षा जून 2024 में आशीष नेताम ने वाणिज्य विषय में नेट क्वालिफाई किया है। आशीष अब सहायक प्राध्यापक पद पर नियुक्ति के लिए आवेदन करने के अलावा किसी भी विवि के पीएचडी कोर्स में प्रवेश लेने के पात्र होंगे। बस्तर विवि के अध्ययनशाला में अति. रिक्त शैक्षणिक गतिविधि के तहत यूजीसी नेट परीक्षा की तैयारी के लिए निःशुल्क कोचिंग की व्यवस्था की गई थी। वहीं, स्टूडेंट के साथ विवि के अध्ययनशालाओं में कार्यरत दो अतिथि व्याख्याताओं ने भी यूजीसी नेट क्वालिफाई किया है। गेस्ट फैकल्टी डॉ. भुनेश्वर लाल साहू राजनीति विज्ञान में व निशा भोई कम्प्यूटर एप्लिकेशन में यूजीसी–नेट उत्तीर्ण की है। विद्यार्थी की इस सफलता पर विवि के कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव ने शुभकामनाएं देते हुए कहा कि अब बस्तर के युवा भी उच्च शिक्षा पाने के लिए तेजी से आगे आ रहे हैं। उन्हें शमक विवि और संबंधित कॉलेज के माध्यम से स्टैण्डर्ड एडुकेशन देने का हरसंभव प्रयास हो रहा है। विधार्थी एवं अतिथि शिक्षकों की सफलता पर विवि परिवार व उनके परिजनों ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है। जानकारी हो कि नेशनल टेस्टिंग एजेंसी(एनटीए) द्वारा वर्ष में दो बार विश्वविद्यालय अनुदान आयोग(यूजीसी) नेट–जेआरएफ परीक्षा आयोजित की जाती है। विश्वविद्यालय, महाविद्यालय, शोध संस्थानों में अध्यापन कार्य, नियुक्ति एवं स्कॉलरशिप के लिए यह पात्रता परीक्षा होती है। इस परीक्षा में शामिल होने की न्यूनतम योग्यता स्नातकोत्तर है।

स्थानीय ऐतिहासिक मंदिरों की स्थापत्य शैली से अवगत हुए स्टूडेंट्स

इतिहास विभाग की पहल

विवि। विश्व धरोहर सप्ताह के अंतर्गत विश्वविद्यालय के एमए इतिहास के विद्यार्थियों ने नारायणपाल और छिंदगांव के ऐतिहासिक मंदिरों का शैक्षणिक भ्रमण किया। विद्यार्थियों ने प्रमुख रूप से विकासखंड लोहंडीगुड़ा के नारायणपाल स्थित विष्णु मंदिर एवं छिंदगांव स्थित शिव मंदिर का बारीकी से अवलोकन किया।

इस दौरान विद्यार्थियों को दोनों प्रा. चीन मंदिरों की ऐतिहासिकता और इसके स्थापत्य कला की जानकारी दी गई। बताया गया कि दोनों प्राचीन मंदिर एक राजवंश द्वारा बनाए गए हैं पर दोनों का स्थापना काल अलग–अलग हैं। यहां तक कि दोनों की स्थापत्य शैली भी अलग है। दोनों की कलाकृति अनुपम है। बस्तर की प्राचीन स्थापत्य कला और धार्मिक इतिहास को समझने के लिए ये दोनों मंदिर उत्तम उदाहरण हैं।

वर्तमान में ये दोनों मंदिर पुरातत्व विभाग द्वारा संरक्षित हैं। भ्रमण दल का नेतृत्व कर रहीं अतिथि व्याख्याता डॉ. भेनु एवं डॉ. विष्णु सिंह ने बताया इस आयोजन का उद्देश्य न केवल विद्यार्थियों को बस्तर के धरोहरों की विशिष्टताओं को करीब से दिखाना था बल्कि पाठ्यक्रम के अनुसार धरोहर से संबंधित अहम जानकारियां जुटाना और प्रायोगिक ज्ञान प्रदान करना था। पर्यटन की दृष्टि से प्राचीन स्मारकों एवं मंदिरों का महत्व और भी ज्यादा है। ज्ञात हो कि हर वर्ष 19 से 25 नवंबर के बीच पूरी दुनिया में विश्व धरोहर सप्ताह मनाया जाता है।

इस दौरान अपने–अपने विरासत व संस्कृति के प्रति जागरूकता लाने का प्रयास किया जाता है ताकि लोगों में इस विषय के बारे में गहरी समझ विकसित हो। लोग अपने अतीत और सांस्कृतिक धरोहरों को समझें और उसे सुरक्षित रखने का प्रयास करें। इस दौरान वैश्विक संस्था यूनेस्को प्रमुख धरोहर स्थलों को मान्यता भी देता है।

इस बार विश्व धरोहर सप्ताह कार्यक्रमों का थीम 'विविधता की खोज करें और अनुभव करें' है। यह आयोजन विभागाध्यक्ष डॉ. सुकृता तिर्की के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। विद्यार्थियों में ओमप्रकाश, जयनारायण, ज्योति, खुशबू महुओदय भ्रमण में शामिल रहे।

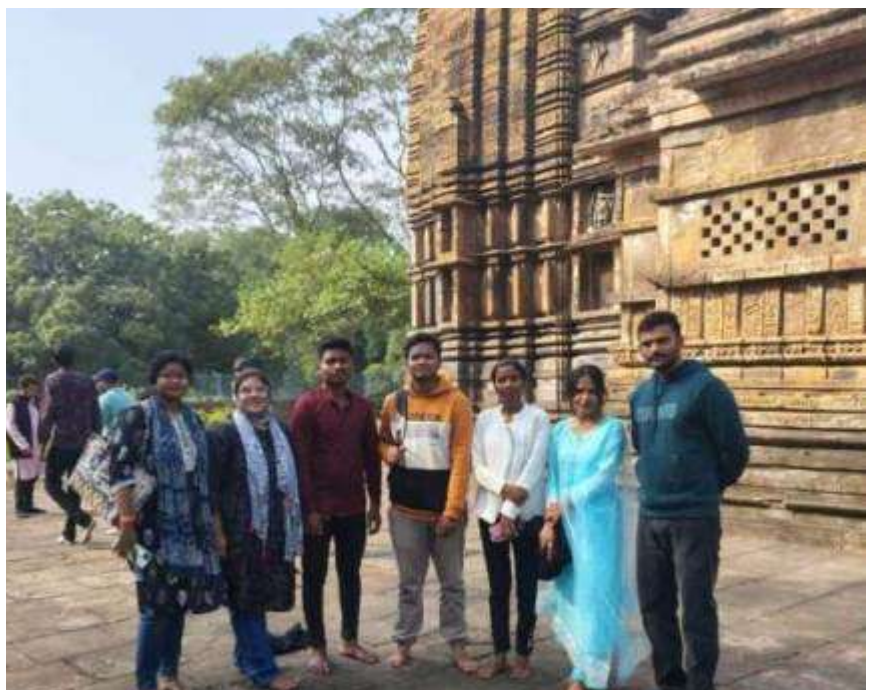

ग्रामीण साप्ताहिक बाजार व्यवस्था का किया अवलोकन

अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों ने किया शैक्षणिक भ्रमण

शमक विवि। विश्वविद्यालय में अध्ययनरत बीए प्रथम वर्ष(अर्थशास्त्र) के विद्यार्थियों ने 22 नवंबर को कुड़कानार साप्ताहिक बाजार का शैक्षणिक उद्देश्य से भ्रमण किया। इस दौरान विद्यार्थियों ने साप्ताहिक बाजार में बिक्री के लिए उपलब्ध वस्तुओं, उसके मूल्य, बिक्री की स्थिति, ग्रामीण खरीदारों की संख्या, बिक्रेताओं की आय इत्यादि की व्यवहारिक जानकारी प्राप्त की।

ग्राम पंचायत कुड़कानार के सरपंच सदन राम कश्यम ने विद्यार्थियों को बाजार संचालन प्रक्रिया की जानकारी दी। ज्ञात हो कि स्थानीय बाजार को ग्रामीण अर्थशास्त्र व्यवस्था की रीढ़ माना जाता है। बाजार केवल खरीद–बिक्री का केंद्र नहीं होता बल्कि ग्रामीणों के लिए यह रोजगार का केंद्र भी होता है। यहां ग्रामीणों के जरूरत की हर छोटी–बड़ी वस्तुओं की उपलब्ध्ता होती है। देशी खाद्य पदार्थ भी मिलते हैं।

बिना तराजू के भी विक्रय की प्रक्रिया यहां लोग पसंद करते हैं। ग्राहकों की सुविधानुसार सामान को उपलब्ध कराया जाता है। ग्रामीण क्षेत्र में साप्ताहिक के अतिरिक्त साल में एक बार होने वाले मेले की भी परंपरा है। लोग इस दौरान साल भर की जरूरत के सामान खरीदते हैं। इसमें दूर के भी व्यापारी बाजार लगाने आते हैं। इस अध्ययन दल का नेतृत्व विभागाध्यक्ष डॉ. सुकृता तिर्की के मार्गदर्शन में प्रेमजीत निराला और पूजा ठाकुर ने किया।

रिमोट सेंसिंग हमारे जीवनशैली का प्रमुख अंग : श्री रामयश

भूगोल अध्ययनशाला में स्पेशल लेक्चर का हुआ आयोजन

विवि। भूगोल अध्ययनशााला द्वारा 26 अक्टूबर को 'बेसिक्स ऑफ रिमोट सेंसिंग एंड फेमिलियेरजिंग विद आरएस डेटा' विषय पर स्पेशल लेक्चर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर रिसोर्स पर्सन रामयश प्रजापति ने कहा कि आज सुदूर संवेदन (रिमोट सेंसिंग) हमारे जीवनशैली का महत्वपूर्ण अंग बन गया है। इसका उपयोग जन–जीवन को आसान बनाने के लिए किया जा रहा है।

मिट्टी उपयोग, धरातल का तापमान मापन, वरक्षरण, जंगल आगजनी, चक्रवात, युद्ध, नेविगेशन, सेटेलाइट डेटा, मौसम पूर्वानुमान एवं पर्यावरण संबंधी अन्य समस्याओं का अध्ययन एवं उसका निदान करने के लिए रिमोट सेंसिंग का अधिक से अधिक सहारा ले रहे हैं। श्री रामयश ने बताया कि एरियल फोटोग्राफ के लिए सबसे पहले 1858 में हॉट बैलून का प्रयोग किया गया था।

इसके बाद 1903 में कबूतर पक्षी में कैमरा लगाकर एरियल फोटोग्राफी लिया जाने लगा लेकिन इन प्रयासों से एरियल फोटोग्राफ की गुणवत्ता में सुधार तो हुआ लेकिन वह उस हाई क्वाईलिटी का नहीं था जिसकी जरूरत महसूस की जा रही थी। कई प्रयोगों के बाद 1960 के दशक से कैमरे की जगह सेंसर का उपयोग किया जाने लगा। जिससे हाई क्वाईलिटी के एरियल फोटोग्राफ मिलने लगे।

इससे पहले द्वितीय विश्व युद्ध में भी अमेरिका ने रिमोट सेंसिंग का उपयोग किया था। श्री रामयश ने बताया कि रिमोट सेंसिंग में दो प्रकार के सेंसर का इश्तेमाल किया जाता है। पैसिव सेंसर से सूर्य की रोशनी में ऐरियल फोटोग्राफ लिया जा सकता है वहीं एक्टिव सेंसर में रात–दिन में कभी भी यहां कि खराब मौसम में भी एरियल फोटोग्राफ लिया जा सकता है।

श्री रामयश ने अपने लेक्चर में भू स्थैतिक उपग्रह के कार्य करने की प्रक्रिया, यूएसजीएस, एसएएफ, सर्वे ऑफ इंडिया, जीआईएस, मैप इन्फो के बारे में बिस्तार से जानकारी दी।

इससे पहले अपने स्वागत उद्बोधन में अध्यनशाला की हेड डॉ. सृकृता तिर्की ने विश्व और भारत में रिमोट सेंसिंग के क्षेत्र में हो रहे डेवलपमेंट और दैनिक जीवन में उसके उपयोग की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि रिमोट सेंसिंग की व्यापक उपयोग किए जाने के कारण आज कई विश्व. विद्यालयों में इससे जुड़े पाठ्यक्रम शुरू किए जा रहे हैं।

कार्यक्रम का संचालन गेस्ट लेक्चरर डॉ. राकेश कुमार खरवार एवं एमए की छात्रा नैना सिंह धाकड़ ने किया। आयोजन में डॉ. रविंद्र कुमार यादव, डॉ. गुरप्रीत सिंह, डॉ. मनीषा, गौरी देवांगन, शैली पटेल, राहुल सिंह, प्रेमजीत निराला, देवेंद्र यादव, पूजा ठाकुर, सुश्री भारती एवं स्नातक और स्नातकोत्तर के विद्यार्थी उपस्थित थे। इस दौरान रिसोर्स पर्सन ने विद्यार्थियों के कई सवालों का जबाब भी दिए।

विवि में योग व ध्यान शिविर जारी

विवि। विश्वविद्यालय के कालीपुर स्थित न्यू कैंपस के बीएड भवन में योग व ध्यान का निःशुल्क प्रशिक्षण शिविर जारी है। हर शनिवार और रविवार को सुबह सात से पौने आठ बजे तक यह शिविर आयोजित हो रहा है।। प्रथम 25 मिनट शारीरिक स्वास्थ्य के लिए विभिन्न आसन कराए जा रहे हैं और फिर 20 मिनट मान. सिक स्वास्थ्य के लिए ध्यान कराया जा रहा है। इसका लाभ विवि के अधिकारी, कर्मचारी, छात्र–छात्राएं ले रहे हैं।

इसके शुभारंभ अवसर पर कुलपति प्रो एमके श्रीवास्तव ने कहा कि विद्यार्थियों और शिक्षकों को कक्षा में एकाग्र बने रहने के लिए मन और शारीरिक रूप से स्वस्थ होना जरूरी है। योग और ध्यान इसका सर्वोत्तम उपाय है। एकाग्रता से कोई भी लक्ष्य प्राप्त करना आसान होता है। योग व्यक्ति को मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ रखता है। नियमित रूप से योग करने से स्वास्थ्य और मानसिक समस्या का निराकरण किया जा सकता है। शिविर में प्रेमजीत निराला, डॉ. आरके खरवार और शैली पटेल, शुभम सिंह और निखिल कुमार प्रशिक्षण दे रहे हैं। बताया गया कि समय–समय पर शिविर में बाहर के योग और ध्यान प्रशिक्षण विशेषज्ञ को भी आमंत्रित किए जाएंगे। ज्ञात हो कि गत दिनों अंतरमहाविद्यालयीन युवोत्सव कार्यक्रम में विधायक किरण सिंह देव ने विवि में योग और ध्यान क्लब का उद्घाटन किया था।

आगामी परीक्षा तैयारी के लिए दिए टिप्स

विवि। शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय के भूगोल अध्ययन शाला में सेमेस्टर परीक्षा की तैयारी के लिए 02 जनवरी को मार्गदर्शन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर धुर्वाराव माड़िया शासकीय महाविद्यालय, भैरमगढ़ के सहायक प्राध्यापक, भूगोल श्री रामयश ने अध्ययन और परीक्षा में अच्छे अंक लाने को लेकर कई टिप्स दिए। श्री रामयश ने विद्यार्थियों को उत्तर लिखने व समय का बेहतर उपयोग के तरीके बताए। विश्वविद्यालय स्तर पर पहली बार परीक्षा देने वाले विद्यार्थियों के जिज्ञासाओं को लेकर कई सुझाव दिए। विभागाध्यक्ष डॉ. सु.ता तिर्की के निर्देशानुसार हुए इस कार्यक्रम में अतिथि व्याख्याता डॉ. राकेश कुमार खरवार व गौरी देवांगन उपस्थित थे।

बाबा गुरू घासीदास के विचार हमारे संविधान में शामिल– श्री शोरी

पोस्ट मैट्रिक एससी बालक छात्रावास में कार्यक्रम आयोजित

विवि। संत शिरोमणि गुरु घासीदास जी की 268वीं जयंती के अवसर पर पोस्ट मैट्रिक अनुसूचित जाति(एससी) बालक छात्रावास, धरमपुरा में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। वैचारिक उद्बोधन कार्यक्रम में मुख्य वक्ता अनुसूचित जाति एवं जनजाति कल्याण विभाग के सहायक आयुक्त गणेश राम शोरी ने कहा कि बाबा गुरूघासी के विचार हमारे संविधान के मौलिक अधिकारों में स्पष्ट झलकते हैं।

बाबा घासीदास ने समानता, स्वतंत्रता, छुआछूत दूर करने के विचार समाज में रखे थे। इन्हीं सब विचारों को बाबा साहब भीमराव अंबेडकर ने संविधान के विभिन्न अनुच्छेदों में स्थान दिया। श्री शोरी ने कहा कि बाबा गुरूघासी दास वैज्ञानिक एवं दूरगामी दृष्टि रखने वाले संत थे। उन्होंने 18वीं शताब्दी के दौरान समाज को जीने का एक नया रास्ता दिखाया। समाज को आगे बढ़ाने के लिए उन्होंने मदिरा सेवन, मांसाहार से दूर रहने को कहा। साथ ही साथ उस समय बलि प्रथा, मूर्ति पूजा का पुरजोर विरोध किया था। वानिकी विभाग, पीजी कॉलेज, जगदलपुर के प्रो. विमल रात्रे ने अपने उद्बोधन के दौरान बाबा गुरूघासी के संदेशों को अपने जीवन में अपनाने की शपथ दिलाई। उन्होंने कहा कि स्वयं आगे बढ़ने और समाज को भी आगे ले जाने के लिए विद्यार्थियों को प्रतिक्षण मेहनत करनी चाहिए। विधि विभाग के अध्यक्ष डॉ मोहन सोलंकी ने संविधान में मिले मौलिक अधिकारों, स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व, अस्पृश्यता संबंधी अपने विचार रखे। शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय में एसोसिएट प्रोफेसर डॉ संजीवन कुमार ने कहा कि सतनाम धर्म केवल एक नाम नहीं बल्कि एक संपूर्ण जीवन दर्शन है। जिसके माध्यम से हम सत्य व न्याय के मार्ग पर चलते हुए अपने जीवन लक्ष्य को प्राप्त करते है। विद्यार्थियों को भी अपने जीवन लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हमेशा सत्य के मार्ग पर चलना चाहिए।

खेल अधिकारी डॉ मदनलाल कुर्रे एवं छात्रावास के पूर्व रहवासी विद्यार्थियों ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम की अध्यक्षता छात्रावास अधीक्षक योगेश कुमार जंगम ने की। इससे पहले कार्यक्रम का शुभारंभ बाबा गुरू घासीदास की पूजा–अर्चना से की गई। विद्यार्थियों ने पंथी गीत व नृत्य भी प्रस्तुत किए। कार्यक्रम में डॉ खुंटे, श्री लक्ष्मीकांत, सोनू कश्यप, राक. श धृतलहरे, चन्द्रभान कुर्रे, नरेंद्र बंजारे, श्री अमित एवं एसटी और पिछड़ा वर्ग छात्रावास के विद्यार्थी सहित अन्य उपस्थित थे। मंच संचालन पूर्व छात्रावासी प्रेमजीत निराला तथा आभार प्रदर्शन छात्रावास के अध्यक्ष हेमंत कुमार ने किया।

सभी भाषाओं का सम्मान होना चाहिए : सांसद श्री कश्यप

श्री वेदमाता गायत्री शिक्षा महाविद्यालय में भारतीय भाषा महोत्सव आयोजित विश्वविद्यालय ने किया सक्रिय सहयोग

विवि संवादाता। भारतीय भाषा दिवस के उपलक्ष्य में सात दिसंबर को श्री वेदमाता गायत्री शिक्षा महाविद्यालय कंगोली में विद्या भारती के मार्गदर्शन में भाषा महोत्सव का आयोजन किया गया। शहीद महेंद्र कर्मा विवि के सहयोग से हुए इस कार्यक्रम के दौरान देश के विभिन्न भारतीय भाषा संस्कृति के 34 मनोरम कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। मिनी भारत जैसी विविधता और अपनी सांस्कृतिक जागरूकता के लिए जाने वाले इस जगदलपुर शहर के दर्शकों ने इस कार्यक्रम को खूब सराहा।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सांसद महेश कश्यप ने कहा कि हमसब मां भारती के लिए जीते हैं। आजादी के बाद राजभाषा के रूप में हिंदी को स्वीकार किया गया। हमारा देश अपनी समृद्ध भाषा विविधता के कारण भी विश्वगुरु कहलाता है। श्री कश्यप ने कहा कि जब प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी हिंदी भाषा में देश–दुनिया में बोलते हैं तो गर्व का अनुभव होता है। हमें अपनी भाषा और संस्ति की रक्षा करना है। हमारे देश में कई अलग–अलग भाषाएं हैं पर हम सब भारतीय हैं। यहाँ सारी भाषाओं का सम्मान है।

ज्ञात हो कि तमिल महाकवि चिन्नास्वामी सुब्रमण्यम भारती की जयंती के उपलक्ष्य में इस बार भी 04 से 11 दिसंबर के बीच देशभर में भारतीय भाषा सप्ताह का आयोजन किया जा रहा है। इस वर्ष के भारतीय भाषा उत्सव का थीम भाषाओं के माध्यम से एकता रखा गया है। विचार संबोधन के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम में पूरे भारत की भाषाई संस्कृति को एक कड़ी के रूप में प्रस्तुत किया गया। छत्तीसगढ़ी के अतिरिक्त संस्कृत, कन्नड़, मलयालम, मराठी, बांग्ला, पंजाबी, तेलुगू, उड़िया, राजस्थानी, अवधी, संबलपुरी, असमी, बिहारी, जैसे कई भाषाओं के कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। पंजाबी, सिंधी जैसी भाषाओं के सम्मानीय लोगों ने अपनी भाषा की विशेषता और अतीत का वर्णन किया। इस अवसर पर डॉ. खिलेश्वर सिंह, सुरेश रावल, डॉ. मोहन सोलंकी, विजय लक्ष्मी दानी, कमलेश मौर्य, मुक्ता रॉय को उनके उल्लेखनीय सामाजिक कार्यों के लिए सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री वेदमाता गायत्री शिक्षण समिति के अध्यक्ष कुंवर राजबहादुर सिंह राणा ने की। कार्यक्रम में डॉ. विनोद कुमार सोनी, डॉ. सजीवन कुमार, डॉ. केपी सिंह, डॉ. गणेश प्रसाद नाग, डॉ. प्रतीक लागू, भरत कुमार गंगादित्य, ईश्वर प्रसाद तिवारी, विद्या भारती उच्च शिक्षा प्रांतीय टोली के सदस्य सहित अन्य उपस्थित थे। गौरतलब है कि देश में भाषाई सौहार्द को मजबूत करने के उद्देश्य से केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय की भारतीय भाषा समिति ने हर वर्ष 11 दिसंबर को भारतीय भाषा दिवस मनाने का निर्णय लिया है। राष्ट्रीय एकता के लिए युवाओं को संदेश देने के लिए भारतीय भाषा दिवस मनाया जाना बहुत अच्छी पहल है। संचालन ईश्वर प्रसाद तिवारी ने किया। भाषा कला व संस्कृति से जुड़ी होती है। संस्कृति हमारी भाषाओं में समाहित है। भाषा के माध्यम से संस्कृति अभिव्यक्त भी होती है। अलग अलग भाषा जानकर सीखकर एक–दूसरे की संस्कृति को समझा जा सकता है। हर भाषा बोली का अपना महत्व है। जगदलपुर में देश के हर भाषा संस्कृति के लोग रहते हैं। यहां यैसे आयोजन बहुत ही प्रभावी होगा। राष्ट्र की समृद्ध सांस्कृतिक एकता को पोषित करने के लिए यह बहुत सुंदर परियोजना है। इसलिए भारतीय विद्या भारती ने भारतीय भाषा महोत्सव परियोजना पर सरकार की मंशानुरूप विशेष आयोजन करने की पहल की है। एक भारत श्रेष्ठ भारत के लक्ष्य को साकार करने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी भाषा के स्तर पर विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनाने पर जोर दिया गया है। इसलिए कॉलेज और यूनिवर्सिटी लेवल पर इस तरह के आयोजन किए जाने की शुरूआत हुई है।

विभिन्न भाषाओं के विद्वान, पत्रकार, समाज सुधारक व तमिल महाकवि चिन्नास्वामी सुब्रमण्यम भारती उत्तर और दक्षिण के बीच सेतु माने जाते थे। उन्होंने देशभक्ति और राष्ट्रवाद को जगाने वाले कई ज्वलंत गीत लिखे थे। भारतीय भाषा दिवस कार्यक्रम के माध्यम से युवाओं को विभिन्न भारतीय भाषाओं की शब्दावली, उसकी शैली, उसकी विशेषता को जानने का मौका मिलेगा। स्टूडेंट्स देश की सुंदर सांस्कृतिक विरासत को जान पाएंगे। युवाओं के बीच भाषा सद्भाव को बढ़ावा मिलेगा।

इस परियोजना का उद्देश्य छात्रों को भारतीय भाषाओं के बारे में जानकारी देने के साथ–साथ उन्हें कुछ भारतीय भाषा सीखने के लिए प्रोत्साहित करना भी है। भाषा के माध्यम से वे राष्ट्रीय एकता सद्भाव का अनुभव कर सकेंगे। ऐसे आयोजन युवाओं के अन्य भारतीय भाषा सीखने के प्रति उत्साह को गति देगा। युवा दूसरे भाषाओं का सम्मान करना भी सीखेंगे। सभी भाषाओं का प्रचार प्रसार हो जाएगा।

दक्षिण भारत के महर्षि वाल्मीकि कहे जाते हैं तमिल महाकवि चिन्नास्वामी सुब्रमण्यम भारती : डॉ देवनारायण

प्रमुख वक्ता विद्या भारती के संगठन मंत्री डॉ. देवनारायण साहू ने कहा कि युवाओं को अपनी मातृभाषा के अतिरिक्त कोई एक और भारतीय भाषा सीखनी चाहिए। डॉ साहू ने कहा कि जो स्थान उत्तर भारतीय समाज में महर्षि वाल्मीकि का है वही स्थान दक्षिण भारत में तमिल कवि सुब्रमण्यम भारती का है। जिस प्रकार बंकिम चंद्र चटर्जी ने वंदे मातरम् जैसे गीत लिखकर समाज को जागृत किया था उसी प्रकार सुब्रमण्यम भारती ने अपनी क्षेत्रीय भाषा के कविता के माध्यम से लोगों को देशभक्ति के लिए जागरूक किया था। वे देश के सभी भाषा के सम्मान और एकता के हिमायती थे।

संविधान बनने के बाद लोगों को अधिकार मिला : डॉ. सोलंकी

संविधान और राष्ट्रीय एकता विषय पर व्याख्यान आयोजित

विवि। संविधान निर्माण पूर्ण होने के उपलक्ष्य में हर वर्ष 26 नवंबर को मनाए जाने वाले संविधान दिवस को लेकर 25 नवंबर को विश्वविद्यालय में व्याख्यान का आयोजन किया गया। 'भारतीय संविधान और राष्ट्रीय एकता' विषय पर आयोजित व्याख्यान में प्रमुख वक्ता के रूप में शासकीय काकतीय पीजी कॉलेज, जगदलपुर में विधि विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. मोहन सोलंकी उपस्थित थे।

डॉ. सोलंकी ने कहा कि संविधान के लागू होने के बाद जनता को संपूर्ण अधिकार मिला। चुनाव के माध्यम से जनता को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से नेतृत्व चुनने का अधिकार मिला। भारतीय संविधान में जो हम भारत के लोग नामक प्रस्तावना लिखी गई है जिसमें पूरी शक्ति जनता में निहित है। संविधान बनने के बाद भारतीय जनता संप्रभू बन पाई। डॉ. सोलंकी ने बताया कि आजादी के समय एक लंबी प्रक्रिया के तहत देश के संविधान का निर्माण हुआ है। देश में जो संविधान 26 नवंबर 1949 को बनकर तैयार हुआ और 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ इसके निर्माण की प्रक्रिया 1919 के एक्ट से प्रारंभ हो गई थी। भारतीय सरकार अधिनियम 1935 उसका आधार बना। संविधान निर्माता बाबा साहेब अंबेडकर के

नेतृत्व वाली ड्राफ्टिंग समिति के अतिरिक्त कई समिति बनाकर संविधान का निर्माण किया गया है। डॉ. सोलंकी ने कहा कि संविधान में जो लिखा है वह परिवर्तनशील है। समय की आवश्यकता के अनुसार इसमें संशोधन भी किए जा सकते हैं। अपने उद्बोधन के दौरान डॉ. सोलंकी ने संविधान की प्रस्तावना, उसकी विशेषताएं और महत्ता पर विस्तार से जानकारी दी।

कार्यक्रम में उपस्थित कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि हम सभी को अपने संवैधानिक मूल्यों को समझना चाहिए। संविधान और सामाजिक संरचना विकास के आधार हैं। इसी पर चलकर आज हमारा देश वैश्विक स्तर पर शक्तिशाली देश बन पाया है। अपने स्वागत उद्बोधन में शिक्षा अध्ययनशाला के ताल्कालीन अघ्यक्ष डॉ. आनंद मूर्ति मिश्रा ने कहा कि संविधान केवल राजनीति और विधि शास्त्र के विद्यार्थियों का विषय नहीं है बल्कि यह देश के हर नागरिक के जानने का विषय है । हम सभी को न केवल संविधान के प्रति जागरूक रहना है बल्कि इसे अपने व्यवहार में भी उतारना है। तभी देश का चहुंमुखी विकास होगा।

इस अवसर पर कुलपति सर ने सभी विद्यार्थियों को संविधान की प्रस्तावना का वाचन कराया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. भुनेश्वर लाल साहू ने किया।

जनजातीय गौरव की पुनर्स्थापना प्रयास

जनजातीय समाज का सहभागिता भाव व मौखिक शिक्षा अद्वितीय : सुश्री उसेंडी

गौरवशाली अतीत विषय पर आयोजित कार्यशाला में बस्तर संभाग के 52 कॉलेजों की रही प्रतिभागिता

विवि। जनजातीय समाज का सहभागिता भाव और मौखिक शिक्षा का इतिहास अद्वितीय है। हमारी बाड़ी और खेतों में जड़ी–बूटी के रूप में औशधि के खान हैं। यह समाज स्वास्थ्य, शिक्षा, परंपरा के क्षेत्र में सशक्त है। जनजातीय समाज के पास हर प्रकार के ज्ञान का भंडार है। बस जो ज्ञान–परंपराएं परिस्थिति और काल के गर्त में चली गई है उसे उकेरकर सामने लाने की आवश्कता है।

उक्त बातें 07 अक्टूबर को विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यशाला में बतौर मुख्य अतिथि बस्तर विकास प्राधिकरण की उपाध्यक्ष सुश्री लता उसेंडी ने व्यक्त किए। कार्यक्रम में महापौर श्रीमती सफीरा साहू, कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव, वनवासी विकास समिति के श्री वैभव सुरंगे सहित अन्य उपस्थित थे।

'जनजातीय समाज का गौरवशाली अतीत– ऐतिहासिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक योगदान' विषय पर आयोजित कार्यशाला में सुश्री उसेंडी ने आगे कहा कि देश में जनजातीय वीर–वीरांगणाओं के बलिदान की कई भूमि हैं जिसे प्रणाम करने की इच्छा करती है। नई पीढ़ी को इसकी जानकारी होनी चाहिए। हम अपनी परंपराओं और ज्ञान को भुलाते जा रहे हैं। इस ज्ञान परंपरा को पुनर्जीवित कर भावी पीढ़ी तक ले जाने की जरूरत है।

अपने स्वागत उद्बोधन में कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि अतीत से लेकर अब तक देश के निर्माण व विकास में जनजातीय समाज का योगदान अन्य समाज से तिल मात्र कम नहीं है। जनजातीय समाज का हर क्षेत्र में योगदान इतिहास में दर्ज है। प्रो. श्रीवास्तव ने बताया कि वर्तमान की केंद्र सरकार ने सम्पूर्ण जनजातीय समाज के उत्थान के लिए नौ पैरामीटर आइडेंटिफाई कर काम शुरू किया है। इसमें धरती आबा जनजाति ग्राम उत्कर्ष अभियान के तहत 80 हजार करोड़ रुपये खर्च होंगे। इससे देश के 63 हजार जनजातीय गांव लाभान्वित होंगे।

महापौर सफीरा साहू ने कहा कि जब आधुनिक शस्त्र नहीं थे तब भी जनजातीय समाज अपने परंपरागत अस्त्रों से देश की आजादी के लिए लड़ा। हम फिर से उस इतिहास को जानने का प्रयास कर रहे हैं। इसे वर्तमान युवा पीढ़ी भी जाने और लोगों को बताए।

कार्यशाला के प्रमुख वक्ता श्री वैभव सुरंगे ने कहा कि जनजातीय समाज को समझने के लिए केवल विदेशी लेखकों को पढ़ने की आवश्यकता नहीं है। जनजातीय समाज के अतीत को जानने के लिए संथाल, मुरिया, मुंडा, गोंड व हल्बा इत्यादि समाज के पुरूखों से मिलना होगा। श्री सुरंगे ने कहा कि मुख्य समाज का इस ओर कभी ध्यान ही नहीं गया कि जनजातीय समाज का भी कोई आध्यात्मिक योगदान है और उनका का भी कोई दर्शन है। जनजातीय समाज को सुनने से ज्यादा महसूस करके समझा जा सकता है।

श्री सुरंगे ने बताया कि भारतीय इतिहास जहां से शुरू हुआ है वहीं से जनजातीय समाज का भी इतिहास प्रारंभ है। बिना शबरी, केवट प्रसंग के रामायण महाभारत भी अधूरा है। श्री सुरंगे ने देश की आजादी में जनजातीय वीर–वीरांगणाओं के योगदान का इतिहास बताते हुए कहा कि इस समाज का स्वतंत्रता आंदोलन में बलिदान मंगल पांडे के बलिदान से भी पहले है। वीर योद्धा तिलका मांझी ने 1780 में ही अग्रेंजों के खिलाफ विद्रोह कर दिया था। यह संथाल क्रांति 1857 के स्वतंत्रता आंदोलन की प्रेरणा थी। अंग्रेजों के खिलाफ जनजातीय वीरों का विद्रोह सदैव चलता रहा। जो बातें सदियों पहले आचार्य चाणक्य ने कही थी उसे भगवान बिरसा ने कहकर समाज को एकत्रित किया। भगवान बिरसा ने अपने छोटी सी आयु में युगों का काम किया। उन्होंने समाज सुधार, न्याय, ज्ञान, क्रांति की नई सीख दी।

श्री सुरंगे ने अपने उद्बोधन में परलकोट विद्रोह, सिद्धो कान्हों, भूमकाल, पामगढ़ भील क्रांति इत्यादि का जिक्र करते हुए कहा कि जनजातीय समाज को लेकर अंग्रेजों के कारण बनी खराब छबि को बदलने का काम शिक्षा जगत के लोग ही कर सकते हैं। जनजातीय समाज की एक–एक परंपरा का डॉक्यूमेंटेशन किए जाने की जरूरत है। उनके इतिहास को लेकर नए सिरे से रिसर्च करना जरूरी है। अपने आभार उद्बोधन में तत्कालीन कुलसचिव श्री अभिषेक कुमार बाजपेई ने कहा कि किसी समाज की संस्कृति नष्ट हो जाती है तो वह समाज भी मिट जाता है। हमें अपने गौरवमयी इतिहास और संस्कृति को युवा पीढ़ी के सहारे आगे तक पहुंचाना है।

अपने स्वागत उदबोधन में कार्यशाला के संयोजक डॉ. सजीवन कुमार ने कहा कि जनजातीय समाज के वीर–वीरांगणाएं विपरीत परिस्थितियों में देश के लिए संघर्ष करते रहे। हमें इन वीरों के इतिहास को शोध के सहारे लिखित रूप में विस्तृत रूप में प्रस्तुत करने की जरूरत है।

कार्यक्रम के तकनीकी सत्र को वनवासी कल्याण आश्रम के राजीव शर्मा, प्रकाश ठाकुर, यज्ञ जी, उमेश सिंह, हरवंशु जोशी ने संबांधित किया। कॉलेजों में जनजातीय वीर–वीरांगणाओं से लेकर प्रश्नोत्तरी, फोटो प्रदर्शनी, पेंटिंग, सांस्कृतिक कार्यक्रम जैसे विविध कार्यक्रम को करने जानक. ारी दी गई । इसमें बस्तर संभाग के 52 कॉलेजों से आए कार्यक्रम के संयोजक और सह संयोजकों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. दिलेश जोशी ने किया। कार्यक्रम में पूर्व विधायक राजाराज तोड़ेम, दशरथ कश्यप, रामनाथ कश्यप, एस राव, गोपाल भारद्वाज, श्री कमलेश, सत्यनारायण पुजारी, बालसाय नेताम, एसपी बिसेन, डॉ. केपी सिंह, संजय जायसवाल, चेलाराम सिन्हा, गोपालनाथ, विमल पांडेय, शिवशंकर जी, रूपनाथ पांडेय, अमित कुमार उपस्थित थे।

रायपुर में कार्यशाला आयोजित

विवि संवाददाता। जनजातीय अस्मिता, अतीत को वैश्विक पहचान देने के लिए भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती 15 नवंबर को केंद्र सरकार द्वारा व्यापक और भव्य स्तर पर मनाया गया। छत्तीसगढ़ सरकार ने भी 15 नवंबर को हर जिले में 'जनजातीय गौरव दिवस' कार्यक्रम आयोजित किया।

इससे पहले इस संदर्भ में रायपुर में मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय की उपस्थिति में 'जनजातीय समाज का गौरवशाली अतीत'–एतिहासिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक योगदान विषय पर एकदिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला की अध्यक्षता प्रदेश के वन व जलवायु मंत्री श्री केदार कश्यप ने की। विशेष अतिथि के रूप में पूर्व मंत्री भईया लाल राजवाड़े उपस्थित रहे। कार्यशाला में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव ने भी भाग लिया। इस कार्यशाला में शामिल एसोसिएट प्रो डॉ. सजीवन कुमार और डॉ. बीएल साहू को शमक(बस्तर) के सभी 52 कॉलेजों में जनजातीय गौरव दिवस कार्यक्रम आयोजित करने के लिए क्रमशः संयोजक और सह संयोजक बनाया गया। कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि केंद्र और प्रदेश सरकार के निर्देशानुसार विवि और विवि के अधीनस्थ कॉलेजों में जनजातीय सभ्यता, संस्कृति, इतिहास, अस्मिता से संबंधित कार्यक्रम निरंतर आयोजित करेगा। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने भगवान बिरसा मुंडा के शौर्य और वीरता के साथ शहीद वीर नारायण सिंह, गैंद सिंह, गुण्डाधूर जैसे नायकों के स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका के अतिरिक्त अन्य अनाम जनजातीय वीर नायक–नायिकाओं को वैश्विक पहचान देने की बात कही है। साथ ही वर्तमान पीढ़ी में इन नायकों के प्रति स्वाभिमान जाग्रत करने समय–समय पर प्रदेश में विभिन्न कार्यशालाएं और कार्यक्रम किए जाने की घोषणा की है।

कार्यशाला में उच्च शिक्षा विभाग के सचिव श्री प्रसन्ना सी आर, उच्च शिक्षा आयुक्त श्री जनक प्रसाद पाठक, वनवासी विकास समिति के अखिल भारतीय युवा कार्य प्रमुख श्री वैभव सुरन्गे, वनवासी समिति के प्रांत अध्यक्ष श्री उमेश कच्छप सहित अन्य उपस्थित रहे।

कुलपति प्रो. श्रीवास्तव ने बताया कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने जनजातीय समुदाय के समेकित विकास का संकल्प लिया है। उन्होंने इस समाज के विकास के लिए कई योजनाओं की शुरूआत की हैं। इसी कड़ी में देश की स्वतंत्रता और जनजातीय समाज की अस्मिता की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व त्याग करने वाले जनजातीय गौरव के प्रतीक भगवान बिरसा मुंडा की जयंती पूरे देश में व्यापक स्तर पर मनाए जाने का निर्णय लिया है। देश भर के लोग जल, जंगल व जमीन की लड़ाई लड़ने वाले लोकनायक भगवान बिरसा मुंडा के प्रति भगवान के समान श्रद्धा रखते हैं। जनजाति गौरव माह के अंतर्गत यह समाज विभिन्न कार्यक्रमों के द्वारा अपने जननायक बिरसा मुंडा सहित अन्य नायक–नायिकाओं के ऐतिहासिक, सामाजिक और आध्यात्मिक योगदान को दुनिया के सामने रखेगा।

कार्यक्रम में लगी प्रदर्शनी का अवलोकन करते माननीय अतिथि सुश्री उसेडी एवं कुलपति महोदय

रानी दुर्गावती ने दी थी सर्वश्रेष्ठ शासन व्यवस्था : श्री सतीश

माननीय विधायक जी की उपस्थिति में गौरव दिवस कार्यक्रम आयोजित

विवि। शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय में 19 नवंबर को जनजातीय गौरव दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। भगवान बिरसा मुण्डा की जयंती के उपलक्ष्य में हुए इस कार्यक्रम में विधायक श्री किरण सिंह देव, महापौर श्रीमती सफीरा साहू, पदमश्री धरमपाल सैनी, कुलपति प्रो मनोज कुमार श्रीवास्तव एवं जनजातीय समाज के प्रमुख उपस्थित रहे।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री किरण सिंह देव ने कहा कि अतीत में जब–जब देश, समाज, धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए संघर्ष की जरूरत थी तब जनजातीय समाज के नायक–नायिकाओं ने अपना सर्वस्व योगदान दिया। सन् 1774 से 77 के बीच शहीद अजमेर सिंह ने समाज और देश के लिए अविस्मरणीय संघर्ष किया। ऐसे ही कई नायकों को हम नहीं जानते हैं जिन्हें जानना जरूरी है। हम क्या थे, हमारे पूर्वज, विरासत, संस्कृति क्या थी इसे जानना आवश्यक है। श्री किरण सिंह देव ने बताया कि पिछले 15 नवंबर को केंद्र सरकार के मार्गदर्शन में देश के पांच सौ जिले में भगवान बिरसा मुण्डा की जयंती मनाई गई। अब हमारे सिलेबस में भी जनजातीय शहीदों का नाम होगा।

प्रमुख वक्ता सतीश गोकुल पांडा ने भगवान बिरसा मुंडा, तिलका मांझी के बलिदानों और मानगढ़ की पहाड़ी के संघर्षों को याद दिलाते हुए कहा कि इतिहास में रानी दुर्गावती ने स्वाभियान के लिए संघर्ष किया। रानी दुर्गावती ने मुगलों की छोटी शर्त भी नहीं मानी। उन्होंने सर्वश्रेष्ठ शासन व्यवस्था भी दी

कार्यक्रम को संबोधित करते माननीय विधायक श्री किरण सिंह देव

थी। श्री पांडा ने कहा कि अतीत में जनजातीय समाज ने अंग्रेजों को सबसे अधिक हानि पहुंचाया। इस समाज के वीरों ने कभी अंग्रेजों के सामने घुटने नहीं टेके। लेकिन आजादी के बाद भी इस समाज को देखने की अंग्रेजियत सोच बची है। इस जीवंत समाज को देखने समझने के लिए म्यूजियम और सिनेमा का सहारा लेने का नकारात्मक प्रयास करते हैं। आज भी जनजातीय समाज की न्याय व्यवस्था सरल है। यह समाज एक के लिए सब के भाव से जीता है। हम सबका मूल जनजातीय समाज ही है।

उपस्थित युवाओं को प्रेरित करने के लिए विश्व के प्रख्यात विवि के रिसर्च का जिक्र करते हुए श्री पांडा ने कहा कि आज हमारे जीवन में पढ़ाई का साढ़े 12 प्रतिशत ही योगदान होता है। आत्मविश्वास, कम्युनिकेशन जैसे सॉफट स्किल का योगदान साढ़े 87 प्रतिशत रहता है। इसलिए हमें सॉट स्किल पर भी विशेष ध्यान देना चाहिए।

पूर्व विधायक श्री राजाराम तोड़ेम ने कहा कि इतिहास में जितना स्थान जनजातीय समाज को मिलना चाहिए उतना नहीं मिला है। समाज की अच्छाईयों पर हमें भरोसा करना चाहिए। डॉ. गंगाराम कश्यप ने कहा कि यह जनजातीय समाज संस्कृति के मामले में बहुत ही समृद्ध है। इसमें छूआछूत जैसी सामाजिक समस्याएं नहीं हैं।

इससे पूर्व अपने स्वागत उद्बोधन में कुलपति प्रो. श्रीवास्तव ने कहा कि भगवान बिरसा मुण्डा एक सोच और विचारधारा थे। जिन्हें समाज ने भगवान के रूप में चिन्हित किया। हम भगवान बिरसा के जीवन के जितने पन्ने पलटेंगे उतने ही वे हमारे हृदय में उतरेंगे। जब अंग्रेज सर्वस्व लूट रहे थे तो भगवान बिरसा ने अतुलनीय प्रतिकार किया। प्रो. श्रीवास्तव ने बताया कि केंद्र सरकार के मार्गदर्शन में जनजातीय गौरव दिवस कार्यक्रम किए जा रहे हैं। इन कार्यक्रमों में होने वाले विमर्श से जनजातीय युवाओं में आत्मविश्वास जागेगा। इस अवसर पर जनजातीय समाज के प्रमुखों का शाल व श्रीफल से सम्मानित किया गया। संचालन कार्यक्रम समन्वयक डॉ. सजीवन कुमार एवं डॉ. दिलेश जोशी ने किया। आभार प्रदर्शन कुलसचिव डॉ. राजेश लालवानी ने किया। कार्यक्रम में पप्पुराम नाग, रतन कश्यप, लोकनाथ नाग, जगदीश मौर्य, हिड़मा मंडावी, एसएन सेवता, बाबूलाल बघेल, हरिप्रसाद पन्ना, दशरथ कश्यप, डॉ. एस नेमा, डॉ. एसके कोले, डॉ. एएम मिश्रा, डॉ. एस तिर्की, डॉ. वीके सोनी उपस्थित थे।

जनजातीय पारंपरिक विज्ञान को माडर्न साइंस में समाहित करने का प्रयास करेगा विश्वविद्यालय : प्रो. श्रीवास्तव

अस्मिता, अस्तित्व और विकास संबंधी संगोष्ठी में शामिल हुए विवि के अधिकारी

विवि संवाददाता। पं. दीनदयाल उपाध्याय ऑडिटोरियम, रायपुर में 28 नवंबर को उच्च शिक्षा विभाग द्वारा जनजातीय अस्मिता, अस्तित्व और विकास विषय पर एकदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय, वन व जल संसाधन मंत्री केदार कश्यप सहित अन्य प्रमुख अतिथियों की उपस्थिति में हुए कार्यक्रम में शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव एवं सह प्राध्यापक डॉ. सजीवन कुमार ने भाग लिया।

पैनल डिस्कशन सत्र में कुलपति प्रो. श्रीवास्तव ने जनजातीय गौरव दिवस को लेकर गत दिनों विवि द्वारा हुए कार्यक्रमों की जानकारी दी।

उन्होंने कहा कि बस्तर जैसे जनजातीय क्षेत्र में निःस्वार्थ और समरसता भाव के साथ कार्य करने की जरुरत है। केंद्र और राज्य की दोनों सरकार जनजातीय समुदाय के प्रति संवेदनशील है। शमक विवि भी सरकार की मंशानुसार जनजातीय समुदाय के विकास संबंधी हरसंभव कार्य निष्पादन करेगा।

प्रो. श्रीवास्तव ने बताया कि आगे के समय में विवि न केवल जनजातीय संस्कृति, आस्था, रीति–रिवाज व पारंपरिक ज्ञान को आगे की पीढ़ी तक पहुंचाने का कार्य करेगा बल्कि भारतीय ज्ञान पद्धति और आधुनिक विज्ञान में जनजातीय पारंपरिक विज्ञान ज्ञान को समाहित करने का प्रयास करेगा।

जनजातीय पारंपरिक ज्ञान को शोध के माध्यम से उसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर के उच्च मानक तक पहुंचाने का भी प्रयास करेंगे। साथ ही देशहित और जनजातीय अस्मिता के लिए समाज के वीर –वीरांगणाओं के साहसिक संघर्षों पर शोध कार्य पर बल दिया जाएगा। बस्तर को देश–दुनिया में स्थान दिलाने में हम सब सहभागिता निभाएंगे। प्रो. श्रीवास्तव ने कहा कि क्षेत्र में उच्च शिक्षा के लिए एक मात्र विश्वविद्यालय होने के कारण बस्तर विवि की जिम्मेदारी और ज्यादा है।

बस्तर क्षेत्र में विभिन्न जनजातीय समाज के लोग रहते हैं। इस क्षेत्र में बहुत किए जाने की जरूरत है। इस क्षेत्र में शिक्षा के साथ–साथ समाज और संस्कृति के लिए काम करना शैक्षणिक संस्थानों का कर्तव्य है। विश्वविद्यालय इसे लेकर कई पहल करने की रणनीति बनाया है।

संगोष्ठी में संगठन मंत्री श्री पवन साय, केशकाल विधायक नीलकंठ टेकाम, वरिष्ठ समाजसेवी पुर्नेदु सक्सेना, वनवासी कल्याण आश्रम व विद्या भारती के विवेक जोग, डॉ. राजीव शर्मा, वैभव सुरंगे, श्री रामनाथ कश्यप, देवनारायण साहू सहित अन्य उपस्थित थे। संगोष्ठी में छग शासन के उच्च शिक्षा सचिव श्री प्रसन्ना आर. ने जनजातीय अस्मिता, अस्तित्व और विकास पर प्रदेश के विवि और कॉलेजों में किए जा रहे संबंधित आयोजन और प्रयासों की जानकारी दी। सभी के प्रयासों को मुख्यमंत्री श्री साय और अन्य प्रतिनिधियों ने सराहना की। इस संबंध में अन्य कार्यक्रम निरंतर करने की अपील भी की।

संगोष्ठी में बस्तर अंचल में पीएम आवास और नियद नेल्लानार(आपका अच्छा गांव) योजना की सराहनीय चर्चा हुई। इस योजना के माध्यम से बस्तर के विभिन्न संभागों के ग्रामीण अंचलों में विकास कार्य किए जा रहे हैं। योजनाएं गाव तक पहुंचाई जा रही है। ग्रामीण पर्यटन को आधार बनाकर बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराने का प्रयास किया जा रहा है। लोगों को रोजगार मिल रहा है।

स्टूडेंट्स के लिए दो नए हॉस्टल प्रारंभ

विवि। विद्यार्थियों को हर संभव सुविधा उपलब्ध कराने को संकल्पित शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय में 23 अक्टूबर को दो नए छात्रावास का पूजा–हवन के साथ शुभारंभ किया गया। छात्राओं के लिए स्वामी आत्मानंद इंग्लिश मीडियम मॉडल स्कूल, धरमपुरा के परिसर में बने सौ सीटर छात्रावास की व्यवस्था की गई हैं। यह छात्रावास शासन के द्वारा मॉडल कॉलेज प्रबंधन से अपना छात्रावास तैयार होने तक तात्कालिक सुविधा हेतु प्राप्त की गई है।

वहीं छात्रों को कालीपुर स्थित विवि के नए बिल्डिंग के पास सौ सीटर छात्रावास सुविधा उपलब्ध कराई गई है। कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव की उपस्थिति में गृह पूजा–अर्चना के साथ दोनों छात्रावास प्रारंभ किया गया। कुलपति प्रो. श्रीवास्तव ने बताया कि सुदूर क्षेत्र के सभी विद्यार्थियों को छात्रावास सुविधा नहीं मिलने के कारण उन्हें यहां शहर में रहकर पढ़ाई करना मुश्किल हो रहा था। आर्थिक इत्यादि कारणों से वे रेगुलर क्लास नहीं कर पा रहे थे। इसीलिए विद्यार्थियों की मांग पर विवि प्रबंधन ने अध्ययनशालाओं के नजदीक ही दो नए छात्रावास को व्यवस्थित किया है।

प्रो श्रीवास्तव ने बताया कि पूर्व में दिए गए आश्वासन के अनुसार सुकमा, कोंटा, बीजापुर, भोपालपट्टनम क्षेत्र से आए विद्यार्थियों को प्राथमिकता के साथ हॉस्टल दिया जाएगा। नए छात्रावास में बिजली, पानी, चारपाई, कुर्सी, वाटरकूलर, गार्ड ईत्यादि की व्यवस्था कर ली गई है। प्रो. श्रीवास्तव ने बताया कि इस बार विवि में कई नए अध्ययनशालाएं(विभाग) खोले गए हैं। नियमित विद्यार्थियों की संख्या भी बढ़ी है। इसे देखते हुए दो नए सर्वसुविधायुक्त छात्रावास प्रारंभ किया गया है ताकि सुदूर क्षेत्र के विद्यार्थी नियमित अध्ययन कर सकें। छात्रावास के अभाव विद्यार्थियों को रोज घर से आने और जाने की मजबूरी होती है। इससे पढ़ाई बहुत प्रभावित होती है।

इस अवसर पर विवि के वरिष्ठ प्राध्यापक प्रो. शरद नेमा, प्रो. स्वपन कुमार कोले, प्रो. आनंद मूर्ति मिश्रा, प्रो. विनोद कुमार सोनी, डॉ सजीवन कुमार, डॉ. संजय कुमार डोंगरे, श्री विपिन गुप्ता सहित अन्य उपस्थित थे।

एमबीए स्टूडेंट्स ने किए कामधेनु गौशाला में सेवा कार्य

चिकित्सा उपकरण एवं चारा भी उपलब्ध कराए

विवि। विभागीय सामाजिक जिम्मेदारी कार्यक्रम के तहत विश्वविद्यालय के एमबीए अध्ययनशाला की टीम ने 16 नवंबर को ग्राम कुरंदी स्थित हैप्पी कामधेनु गौशाला में सेवा कार्य किए। इस नरचरिंग एंड नर्सिंग काऊ कार्यक्रम में टीम ने गौशाला में चारा एवं पशु चिकित्सा संबंधी दवाईयां और उपकरण भी उपलब्ध कराए।

इस कार्यक्रम में प्रबंधन(एमबीए) अध्ययनशाला के प्रथम व तृतीय सेमेस्टर के 19 विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। टीम ने दो ट्रैक्टर चारा और 50 किलोग्राम गुड़ गौशाला में दिए। इसके अतिरिक्त बीमार गायों की सेवा के लिए जरूरी मरहम पट्टी, रूई, ग्लूकोज बॉटल व सर्जरी के सामान उपलब्ध कराए। ज्ञात हो कि इस हैप्पी कामधेनु गौशाला में करीब 250 बीमार और लावारिश गायों की सेवा की जा रही है। इस सेवा भ्रमण कार्यक्रम को नेतृत्व कर रहीं अतिथि व्याख्याता डॉ. रश्मि देवांगन ने कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था में गाय का बहुत बड़ा योगदान है। गाय हमारी ग्रामीण अर्थव्यवस्था में आय के प्रमुख स्रोत्र हैं। कई किसान और पशुपालक गायों के पालन पर निर्भर हैं। डेयरी उद्योग और जैविक खाद के क्षेत्र में कई लोगों को रोजगार मिल रहा है। जीडीपी में डेयरी उद्योग का 4 से पांच प्रतिशत का योगदान इसकी महत्ता को दर्शाता है।

एमबीए अध्ययनशाला की इस नई पहल की सराहना करते हुए कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि गायों की सेवा व सुरक्षा एक सामाजिक जिम्मेदारी है। हमारे समाज में गाय का विशेष धार्मिक व सांस्कृतिक सम्मान है। गौमाता में तैंतीस कोटि के देवता का वास माना जाता है। गाय को मां और समृद्धि का प्रतीक माना गया है। वेदों में गौमाता का उल्लेख है। प्रोफेसर श्रीवास्तव ने कहा कि ऐसे आयोजन से विद्यार्थियों में पशु सेवा और सुरक्षा संबंधी जागरूकता आएगी। विद्यार्थी भारतीय परंपरा और संस्कृति से जुड़ पाएंगे। गाय की सेवा के साथ वे अन्य पशुओं की सेवा के प्रति भी सहृदयता रखेंगे।

विभागाध्यक्ष डॉ. विनोद कुमार सोनी के मार्गदर्शन में हुए इस कार्यक्रम में अतिथि व्याख्याता ऐश्वर्या साव और कोमल श्रद्धा बेंजमिन भी शामिल रहीं। विद्यार्थियों में नुपुर, खुशनीत, राधिका, मोहिनी, अलिशा, कुमकुम, अभय, जोशुआ जॉन, एस कथिजा, एस विजयालक्ष्मी, पलाश, प्रशांत, सईद, श्रुति, सुमित, अम्बिका, जूही, इशांक, ईशा ने भाग लिया।

बालिकाओं को बताए जरूरी व परहेज के आहार नियम

बकावंड विद्यालय में विवि द्वारा जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

विवि। बालिकाओं और महिलाओं को पोषण आहार के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से 25 अक्टूबर को कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय, बकावंड में एक दिवसीय पोषण आहार जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

विश्वविद्यालय के समाज कार्य(एमएसडब्ल्यू) अध्ययनशाला की भागीदारी में हुए कार्यक्रम में उपस्थित किशोरियों और महिलाओं को पोषण आहार संबंधी कई जानकारी दी गई। इस अवसर पर कार्यक्रम के प्रारंभ में कस्तूरबा विद्यालय की बालिकाओं द्वारा नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति दी गई। नाटक के माध्यम से बताया गया कि बालिकाओं को अपने दैनिक जीवन में किस प्रकार का भोजन लेना चाहिए और किन चीजों का परहेज करना चाहिए।

सुपरवाइजर पूनम विश्वकर्मा ने अपने उद्बोधन में शासन के पोषण आहार से संबंधी कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए कहा कि हमारे शरीर के लिए पोषक आहार बहुत जरूरी है। सभी बालिकाओं और महिलाओं को बेहतर जीवन के लिए संयमित जीवनशैली और सही खान–पान अपनाना आवश्यक है।

श्रीमती जमू सेठिया ने अपने उद्बोधन में प्रोटीन, विटामिन, खनिज और आवश्यक पोषक तत्वों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि पौष्टिकता के लिए सभी को पारंपरिक भोजन, साग सब्जी और स्थानीय स्तर पर उपलब्ध फलों को अपने आहार में शामिल करना चाहिए। अतिथि व्याख्याता एलिस एंजिल तिर्की ने बताया कि 11 से 16 साल की बालिकाओं को पौष्टिक आहार की अधिक आवश्यकता होती है, क्योंकि इसी उम्र में बालिकाओं में बहुत से शारीरिक एवं मानसिक बदलाव होते हैं। यदि उन्हें पौष्टिक आहार नहीं मिलेगा तो शरीर कमजोर हो जायेगा और भविष्य में उन्हें बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। कार्यक्रम के अंत में विद्यालय की बालिकाओं ने ढ़ेमसा नृत्य की प्रस्तुति दी।

विवि में समाज कार्य अध्ययनशाला की विभागाध्यक्ष डॉ. सुकृता तिर्की के मार्गदर्शन में हुए इस कार्यक्रम में कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय की वार्डन हेमलता ध्रुव, एमएसडब्ल्यू की अतिथि व्याख्याता श्रद्धा डोंगरे, विद्यार्थी युक्ति साहू, निकिता, लीना साहू, निखिल देवांगन, रमा बघेल, परिणिता सिंग एवं बड़ी संख्या में गांव की महिलाएं और बालिकाएं उपस्थित रहीं।

प्राचीन ज्ञान–विज्ञान से जुड़ा है हमारा गृहस्थ जीवन :विवस्वान

भारतीय विज्ञान परंपरा विषय पर संगोष्ठी आयोजित

विवि। शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय के अकादमिक भवन सभागार में 09 नवंबर को 'भारतीय विज्ञान परंपरा और विज्ञान भारती' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि विज्ञान भारती, मध्य क्षेत्र के संगठन मंत्री विवस्वान जी ने कहा कि नालंदा विश्वविद्यालय जैसे कई ध्वंस के बावजूद हमारे प्राचीन विज्ञान वजूद में हैं। आज भी हमारा गृहस्थ जीवन भारतीय विज्ञान से जुड़ा है। रसोई में तुलसी, हल्दी के वैज्ञानिक उपयोग हो रहे हैं। हम छोटे–छोटे स्वास्थ्य परेशानियों का ईलाज घर में ही कर लेते हैं। आक्रमणकारियों ने हमारी सभ्यता, संस्कृति और मानवता के साथ हमारे दिमाग पर भी आक्रमण किया था जिसकी वजह से हमें अपनी ही पारंपरिक वैज्ञानिक बातें झूठी लगने लगी।

श्री विवस्वान ने कहा कि हमें विज्ञान के बारे में अपना दृष्टिकोण निर्माण करने की जरूरत है। हम अपने पारंपरिक विज्ञान की बातें खुलकर करें। साहित्य, गीत, इत्यादि में उपलब्ध आसपास की पारंपरिक ज्ञान विज्ञान की बातों को डॉक्यूमेंटेशन कर किसी भी भाषा बोली में लोगों तक पहुंचाने का काम करें। हमें मॉडर्न साइंस को भी देशानुकूल बनाकर प्रयोग करना होगा। भारतीय विज्ञान के दिशा में अधिक से अधिक शोध हो।

कुलपति प्रो मनोज कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि हमारी प्राचीन ज्ञान व विज्ञान पद्धति बहुत ही समृद्ध थी। आर्यभट, भास्कर, सुश्रुत, कणाद, नागार्जुन, ब्रह्मगुप्त, वराहमिहिर, चाणक्य, पातंजलि इत्यादि प्राचीन ऋृषियों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण व अवधारणा वर्तमान समय के विज्ञान के आधार हैं। आधुनिक विज्ञान में भारतीय विज्ञान का बड़ा अंश समाहित है। हमारे प्राचीन दर्शन वैज्ञानिकी पर आधारित हैं। आज गणित भी भारतीय दर्शन का दूसरा रूप है। प्रो. श्रीवास्तव ने कहा कि हमारे प्राचीन ज्ञान विज्ञान को सरलीकरण करने की जरूरत है। उन्होंने बताया कि आज बाहर के वैज्ञानिक भारत आकर भारतीय प्राचीन ज्ञान विज्ञान पर रिसर्च कर रहे हैं। हमारा देश ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स(जीआईआई) में 133 देशों में 39वें स्थान पर आ गया है जो 2015 में 81वें स्थान पर था। प्रो. श्रीवास्तव ने कहा कि विश्व में विज्ञान की आवश्यकता के लिए विज्ञान भारती का रिसर्च बहुत उपयोगी है। विशिष्ट अतिथि विज्ञान भारती के छग संयोजक डॉ. वरा प्रसाद ने कहा कि अतीत में हमारी परंपराओं को गलत ढंग से पेश किया गया। इस कारण हम अपने आस पास के ज्ञान विज्ञान को बेकार मानने लगे। इसलिए हम विज्ञान के क्षेत्र में पीछे हो गए। हमसे स्व और स्वदेशी की भावना छीन ली गई। हमें फिर से अपने ज्ञान विज्ञान को विश्व मानक तक पहुंच. ाने का प्रयास करना है।

विज्ञान भारती एक स्वदेशी विज्ञान आंदोलन है। इसके सहारे हम अपने प्राचीन खोई ज्ञान विज्ञान को शोध के सहारे सामने लाने का प्रयास कर रहे हैं।

संगोष्ठी के संयोजक डॉ. सजीवन कुमार ने कहा कि ऐसे संगोष्ठी आवश्यक हैं ताकि हम अपने समाज और संभाग की विज्ञान परंपराओं को जानें और उसे सैद्धांतिक रूप देने का प्रयास कर सकें। आभार उद्बोधन में कुलसचिव डॉ. राजेश लालवानी ने कहा कि समस्या का निदान ढूंढने से बेहतर है हम समस्या को आने ही नहीं देने का प्रयास करें। हम अपनी जीवन शैली में वे चीज लाएं जो समस्या को जन्म न दे। ज्ञान विज्ञान की बातें किसी के लिए सीमित नहीं होती है। हमें स्थानीय उदाहरण के साथ साइंस को पढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। हमें सिलेबस के साथ अन्य व्यवहारिक बातें भी जानना जरूरी है। मौके पर वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. एस नेमा, डॉ. एसके कोले, डॉ. एएम मिश्रा, डॉ. एस तिर्की, डॉ. वीके सोनी, डॉ. कुश नायक उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. बीएल साहू ने किया। आयोजन में डॉ. दुर्गेश डिक्सेना व डॉ. नीरज वर्मा सक्रिय उपस्थिति रही।

विश्वविद्यालयीन संक्षिप्त समाचार

मन की शांति के लिए उमंग 2025

विवि। शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास के लिए अधिकारियों, प्राध्यापकों, कर्मचारियों व दैनिक वेतनभोगियों के बीच उमंग 2025 का आयोजन किया गया। इसमें सभी ने भाग लेकर आनंद लिया। महिला और पुरूश वर्ग में बैडमिंटन, कैरमबोर्ड, क्रिकेट और रस्साकशी का आयोजन किया गया।

पर्यावरण एवं उर्जा संरक्षण प्रकोष्ठ गठित

विवि। मेरू प्रोजेक्ट के अनिवार्य गतिविधियों के अंतर्गत कार्य करने एवं एनईपी 2020 के मैंडेट अनुपालन हेतु पर्यावरण एवं उर्जा संरक्षण प्रकोश्ठ का गठन किया गया है।

समन्वयक डॉ. प्रीति दुबे के नेतृत्व वाले प्रकोश्ठ में डॉ गुरप्रीत सिंह सौंध, डॉ. दयानंद साई पेकरा, डॉ. प्रिंस जैन एवं डॉ. राकेश कुमार खरवार को शामिल किया गया है। प्रकोश्ठ द्वारा विवि परिसर में बिजली प्रयोग नियंत्रण, उर्जा सरंक्षण, एनर्जी एवं ग्रीन ऑडिट, रेन वाटर हार्वेस्टिंग, सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट, रूफ टॉप एवं ऑन ग्रिड सोलर पैनल स्थापना इत्यादि संबंधी व्यवस्था एवं कार्य किए जाएंगे।

अब ट्राइबल नॉलेज सिस्टम तैयार करने को लेकर हो रहे हैं प्रयास : डॉ. मण्डावी

एनईपी 2020 पर संवाद कार्यक्रम आयोजित

विवि समाचार। बस्तर सांस्तिक रूप से समृद्ध है। इस जनजातीय क्षेत्र में देशज ज्ञान–विज्ञान का भंडार है। यहां की लोक कला, संस्ति, जीवन पद्धति की पहचान और प्रसिद्धि वैश्विक स्तर पर है।

इसी तरह देश के अन्य जनजातीय क्षेत्र में भी उपयोगी पारंपरिक ज्ञान–विज्ञान उपलब्ध हैं। इसलिए आज भारतीय ज्ञान पद्धति(इंडियन नॉलेज सिस्टम) के साथ जनजातीय ज्ञान पद्धति(ट्राइबल नॉलेज सिस्टम) की बात की जा रही है।

उक्त बातें कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्व. विद्यालय, रायपुर के सहायक प्राध्यापक डॉ. आशुतोष मण्डावी ने व्यक्त किए। वे 16 नवंबर को शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति(एनईपी 2020) विषय पर आयोजित विशेष संवाद कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव उपस्थित रहे।

इस अवसर पर डॉ. मंडावी ने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में भी एक स्टेज होता है। उसमें भी समय के अनुसार बदलाव महसूस की जाती है। उसके अनुरूप एनईपी 2020 सही समय पर आया है। पाठ्यक्रमों को भारतीयता से जोड़ना भी इस बार एनईपी का उद्देश्य है।

उन्होंने कहा कि भारतीय विद्वानों ने समाज, विज्ञान, आध्यात्म, दर्शन, योग ईत्यादि हर क्षेत्र में कई उल्लेखनीय योगदान दिए हैं। भगवान बिरसा मुंडा, तिलका मांझी जैसे कई वीरों ने समाज में आजादी का स्व जगाने का काम किया।

इस बार राष्ट्रीय शिक्षा नीति में इन सभी पहलुओं को जोड़ने का प्रयास किया गया है। ताकि नई पीढ़ी अपने अतीत और संस्ति को समझ सकें और उनमें स्व की भावना आए। डॉ. मंडावी ने कहा कि हमे अपनी भाषा, देशज ज्ञान और लोककलाओं को न केवल सम्मान देना है बल्कि उसे रोजगार से जोड़ने का प्रयास करना है।

आज बस्तर की काष्ठ कला, बॉस कला, माटी कला, धातु(टेराकोटा) कला और हस्तशिल्प की मांग पूरे विश्व में है। हमें इन कलाओं में पेटेंट, आईपीआर, जीआई टैग दिलाने के प्रयास करने होंगे। डॉ. मंडावी ने बताया कि प्राचीन काल से गुरूकुल के रूप में जनजातीय समाज में संचालित घोटुल जैसी कई सामाजिक व सांस्तिक व्यवस्थाओं को अंग्रेज समर्थित इतिहासकारों और साहित्यकारों ने गलत तरीके से प्रस्तुत किया। इस संबंध में समाज को जागरूक करना एनईपी के लक्ष्य में शामिल है।

कुलपति प्रो श्रीवास्तव ने कहा कि हमें गुलामी की मानसिकता वाली छोटी से छोटी चीज को छोड़ना होगा। शिक्षक और छात्र को स्वतः अपने दायित्व को पहचान कर शिक्षा एवं देश के विकास से जुड़ना चाहिए। विद्यार्थी एनईपी 2020 के माध्यम से अपने मनपसंद के विषय सीख सकते हैं। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सजीवन कुमार ने किया।

उन्होंने कहा कि हमें देश के इतिहास परंपरा को अधिक से अधिक जानने का प्रयास करना है ताकि हम उस पर गर्व कर सकें। हमें अंग्रेजियत को सर्वोपरि मानने की मानसिकता छोड़नी होगी। शिक्षा नीति 2020 में इसे लेकर गंभीर प्रयास किए गए हैं।

कार्यक्रम में वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. शरद नेमा, डॉ. स्वपन कुमार कोले, डॉ. आनंद मूर्ति मिश्रा, डॉ. विनोद कुमार सोनी, डॉ एमबी तिवारी, श्री जगमोहन सोनी, अमित कुमार, शैलेश ध्रुव, जीपी नाग, तूणीर खेलकर एवं विभिन्न अध्ययनशाला के अतिथि व्याख्याता उपस्थित थे।

स्वच्छता व्यक्तिगत के साथ सामाजिक जिम्मेदारी

स्वछता पखबाड़ा के तहत मानव विज्ञान और जनजातीय अध्ययनशाला द्वारा स्वच्छता अभियान आयोजित

विवि। मानव विज्ञान एवं जनजातीय अध्ययनशाला में स्वच्छता पखवाड़ा के तहत एक व्यापक स्वच्छता अभियान कार्यक्रम का आयोजन 25 अक्टूबर को किया गया।

इस पहल के अंतर्गत विद्यार्थियों, शिक्षकों, और विश्वविद्यालय के कर्मचारियों ने विभिन्न स्थलों पर सफाई अभियान को सफलतापूर्वक पूर्ण किया। जिसकी अध्यक्षता विभागाध्यक्ष डॉ. स्वपन कुमार कोले (प्रोफेसर) के द्वारा किया गया। कार्यक्रम में डॉ. आनंद मूर्ति मिश्रा (सह प्राध्यापक), डॉ. मुक्तिकान्त पंडा, डॉ. शारदा देवांगन (अतिथि व्याख्याता) एवं शोभा राम नाग (प्रयोगशाला तकनीशियन) एमएससी प्रथम एवं तृतीय सेमेस्टर के छात्र व छात्राए उपस्थित थे। विभागाध्यक्ष डॉ. स्वपन कुमार कोले ने स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण के महत्व पर विद्यार्थियों को संबोधित किया। उन्होंने विशेष रूप से जीरो वेस्ट और रीसायकल इज द वे जैसे आधुनिक दृष्टिकोणों की चर्चा की और छात्रों को इन सिद्धांतों को अपने जीवन में आत्मसात करने के लिए प्रेरित किया। डॉ. कोले ने कहा कि स्वच्छता केवल व्यक्तिगत जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि यह सामाजिक जिम्मेदारी का भी अभिन्न हिस्सा है। जिसे प्रत्येक व्यक्ति को निभाना चाहिए। डॉ. आनंद मुर्ति मिश्रा (सह . प्राध्यापक), ने विश्वविद्यालय को अपने घर की तरह मानते हुए स्वच्छता बनाए रखने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि सफाई हमारे जीवन का अभिन्न अंग है, और इसे बनाए रखना हर व्यक्ति का नैतिक कर्तव्य है।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के वरिष्ठ अधिकारी, कर्मचारी, और विभिन्न विषयों के अतिथि शिक्षक भी उपस्थित रहे, जिन्होंने इस स्वच्छता अभियान में योगदान दिया। विद्यार्थियों और कर्मचारियों ने पूरे अध्ययनशाला के परिसर में सफाई की और स्वच्छता के प्रति जागरूकता प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस पहल का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों और समाज के सभी वर्गों को स्वच्छता के महत्व से अवगत कराना था, ताकि एक स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण का निर्माण किया जा सके। कार्यक्रम के माध्यम से यह संदेश दिया गया कि स्वच्छ भारत अभियान के तहत स्वच्छता को व्यक्तिगत जीवन में लागू करना समाज के हित में है। शाला में भविष्य में भी इस तरह के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा, ताकि स्वच्छता के प्रति जागरूकता को और अधिक बढ़ावा मिल सके।

वीसी इलेवन को मिली जीत

विवि। उमंग 2025 में अंतिम खेल स्पर्धा के रूप में गणतंत्र दिवस पर हुए क्रिकेट मैच में वीसी इलेवन की टीम विजयी रही।

बारह–बारह ओवर के मैच में टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए रजिस्ट्रार इलेवन ने राजेश के 30 रनों की बेहतरीन पारी की बदौलत 101 रन बनाए। डॉ. राजेश सर ने 18 और कुलदीप ने 16 बहुमूल्य रनों की पारी खेली। वीसी इलेवन की ओर से डॉ नीरज ने 4 विकेट लिए। लक्ष्य का पीछा करते हुए वीसी इलेवन ने आकाश सलाम की शानदार 34 रनों की मदद से मैच को दो विकेट से जीत लिया। हीतू ने 19 रन जोड़े।

अंतिम ओवर तक चले इस रोमांचक मैच में जिताऊ 34 रन और 2 विकेट प्राप्त करने वाले ऑलराउंडर आकाश सलाम मैन ऑफ द मैच रहे। उन्हें सर्वश्रेष्ठ बैटर का भी पुरस्कार मिला। रजिस्ट्रार इलेवन की ओर से थान सिंह ने चार विकेट लिए। सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज का पुरस्कार डॉ नीरज को मिला। ज्ञात हो कि विवि के अधिकारियों व कर्मचारियों के बौद्धिक, मानसिक और शारीरिक विकास के लिए उमंग 2025 खेल स्पर्धा का आयोजन हुआ।

टीचिंग में जॉब लगने के बाद भी लर्निंग की जरूरतः प्रो वाजलकर

नए अतिथि व्याख्याता के लिए लर्निंग स्किल इन्हैंसमेंट प्रोग्राम आयोजित

गुरू घासीदास विवि में शिक्षा संकाय के डीन सर ने रखे विचार

विवि। बीएड अध्ययनशाला में 24 अक्टूबर को शिक्षकों के लिए विशेष ट्रेनिंग प्रोग्राम का आयोजन किया गया। कैपिसिटी बिल्डिंग एंड लर्निंग स्किल इन्हैंसमेंट विषय पर आयोजित इस इंटेरेक्टिव सेशन में गुरू घासीदास सेंट्रल यूनिवर्सिटी, बिलासपुर में शिक्षा संकाय के डीन प्रो. चंद्रशेखर वाजलकर ने अध्ययन और अध्यापन के कई टिप्स दिए।

प्रो. वाजलकर ने कहा कि सामान्य धारणा है कि जॉब लगने के बाद लर्निंग और अध्ययन की कोई जरूरत नहीं होती। जॉब के बाद आराम करने की बात सोचते हैं। सामान्य जॉब में ऐसा होता भी है पर टीचिंग एक ऐसा जॉब है जिसमें जॉब के साथ लर्निंग की शुरूआत होती है। हमें निरंतर सीखते रहना होता है। समय के साथ अपने ज्ञान, टेक्नलॉजी, बिहैवियर को अपडेट करते रहना पड़ता है। प्रो. वाजलकर ने कहा कि जॉब लगने तक हम परीक्षा पास करने के लिए पढ़े होते हैं। उसके बाद समय के साथ अध्ययन के विषय में बहुत बदलाव आ जाता है। इसलिए निरंतर लर्निंग जरूरी होता है।

प्रो. वाजलकर ने कहा कि आलोचना और आरोप कुछ भी हो पर हमारे देश की शिक्षा व्यवस्था बहुत ही बेहतर और सस्ता है। अब इंजीनियर और डॉक्टर की तरह हमारे देश के टीचर भी ग्लोबली एक्सेप्ट किए जा रहे हैं। टीचिंग प्रोफेशन में विपरीत परिस्थितियों को भी अवसर के रूप में देखा जाता है। कोरोना काल में शिक्षकों ने टेक्नोलॉजी का सहारा लेकर समाज की शिक्षा व्यवस्था को बचाने का काम किया।

प्रो. वाजलकर ने कहा कि आज अध्यापन के क्षेत्र में कई चुनौतियां हैं पर हमें उसे स्वीकार कर हल करने का प्रयास करना होगा। एक टीचर को कैपिसिटी बिल्डिंग के लिए टीचिंग टेक्नालॉजी को अधिक से अधिक यूज करना सीखना चाहिए। उनके लिए टेक्नालॉली लिटरेसी जरूरी है। उन्होंने कहा कि हम टीचरों को क्या करें या क्या न करें का आत्म निरीक्षण करते रहना चाहिए। हमारे निर्देश भी सरल व्याख्या जैसी होनी चाहिए। प्रो. वाजलकर ने कहा कि आज कई प्रकार के ट्रेनिंग दिए जा रहे हैं। इन ट्रेनिंग के प्रभाव का भी अध्ययन होना चाहिए। एक टीचर को हर वक्त ये सोचना चाहिए कि वे स्टूडेंट्स को पाठ्यक्रम के अतिरिक्त और कौन से स्किल की जानकारी दे सकते हैं। जो उन्हें निजी जिंदगी और जॉब के दौरान काम आए। अध्ययन के दौरान सीखे छोटे–छोटे स्किल बाद में बहुत काम आते हैं। यह स्किल आपको नाम और पहचान दिलाते हैं।

स्टूडेंट्स व्यवस्थित नोट्स कैसे बनाएं, पैराग्राफ राइटिंग कैसा हो, रीडिंग स्किल कैसे बढ़े, व्हाइटबोर्ड और ब्लैक बोर्ड पर लेखन कैसे प्रभावी बने जैसे कई स्किल हैं जिसपर टीचरों को समय देने की जरूरत है। साथ ही सॉफ्ट स्किल, क्रिएटिविटी, क्रिटिकल थिंकिंग, पावर ऑफ नैरेटिव व अट्रैक्शन, टाइम मैनेजमेंट, लीडरशिप, क्यूरिसिटी, गोल सेटिंग, प्रोडक्टिविटी पर विशेष ध्यान देना होगा। उन्होंने कहा कि हायर एजुकेशन के टीचर को प्राइमरी एजुकेशन से अपने को अलग नहीं करना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन सह प्राध्यापक डॉ. सजीवन कुमार एवं आभार प्रदर्शन शिक्षा अध्ययनशाला के अध्यक्ष प्रो. आनंद मूर्ति मिश्रा ने किया। इस अवसर डॉ. डीएल पटेल सहित विभिन्न विषयों के अतिथि व्याख्याता उपस्थित थे।

ज्ञात हो कि विश्वविद्यालय में 2024–25 सत्र में 20 से अधिक नए पाठ्यक्रम प्रारंभ किए गए हैं। सभी संकायों में नए अतिथि व्याख्याताओं की नियुक्ति दी गई है। नए शिक्षकों के ओरिएंटेशन के लिए विश्वविद्यालय प्रबंधन ने टीचिंग स्किल का यह प्रोग्राम का आयोजन किया। विवि परिसर में बीएड पाठ्यक्रम भी संचालित किया जा रहा है। व्याख्यान के दौरान अतिथि शिक्षकों ने अध्यापन संबंधी कई सवाल किए। जिसे प्रो वाजलकर ने व्यवहारिक उदाहरणों के साथ विस्तार से बताया।

जॉब मार्केंट में स्पेशलाइजेशन की मांग

परिचर्चा में उपस्थित कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव ने शिक्षकों से कहा कि पाठ्यक्रम सबंधी शिक्षा ज्ञान का आधार है लेकिन आज जब हम पढ़ने के बाद जॉब मार्केट में जाते हैं तो यह ज्ञान पर्याप्त नहीं होते हैं। केवल क्लास के ज्ञान से काम नहीं चलता।

आज जॉब मार्केट में बहुत ज्यादा प्रतिस्पर्धा है। जहां आइडिया और कान्सेप्ट कम शेयर किए जाते हैं। वहां स्पेशलाइजेशन की मांग की जाती है। इसलिए हमें क्लास के अतिरिक्त स्किल लर्निंग पर ध्यान देना होता है। हमें स्टूडेंट्स के राइटिंग स्किल पर ध्यान देना चाहिए। कम्युनिकेशन कैसे प्रभावी करें, इफेक्टिव लेटर कैसे लिखें, इंडस्ट्री की प्रॉब्लम पर डाटा कलेक्ट कर एनालिसिस और रेपोर्ट कैसे तैयार करें, मार्केट में टेक्नोलॉजी का क्या क्या और कैसे प्रयोग किया जाता है, ये सब नॉलेज छात्रों को डिग्री के साथ देने की अवश्यकता है। छोटे–छोटे स्किल पर काम करने की जरूरत है।

रेगुलर की तरह प्राइवेट स्टूडेंट्स को भी मिल रही हर सुविधा

प्रदेश के उच्च शिक्षा विभाग द्वारा जारी स्वाध्यायी विद्यार्थी नीति 2024 शमक विवि में लागू

शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय, बस्तर(छत्तीसगढ़) के प्रस्तावित बिल्डिंग की तैयार रूपरेखा

विवि। *संतोष कुमार वर्मा, पत्रकारिता छात्र।* प्रदेश में राष्ट्रीय शिक्षा नीति(एनईपी) 2020 लागू करने की कवायद में तेजी आ गई है। रेगुलर स्टूडेंट्स के लिए कई प्रावधानों को लागू करने के बाद राज्य शासन के उच्च शिक्षा विभाग ने प्राइवेट(अमहाविद्यालयीन) विद्यार्थियों के लिए ''स्वाध्यायी विद्यार्थी नीति 2024'' जारी किया है।

इसके तहत शासकीय महाविद्यालयों में प्राइवेट परीक्षा देने वाले स्टूडेंट्स को भी अब लगभग रेगुलर जैसी शैक्षणिक सुविधाएं मिलेंगी। वे अब सेमेस्टर पद्धति से परीक्षा देंगे। प्राइवेट विद्यार्थी घर बैठे ऑनलाइन या अपनी सुविधानुसार कॉलेज के निर्धारित टाइम टेबल में आकर(भौतिक रूप से) पढ़ाई और लेबोरेटरी कार्य कर सकेंगे। उन्हें एक सेमेस्टर में दो आंतरिक(इंटरनल) परीक्षा देने होंगे। साथ ही एक असाइनमेंट भी जमा करना होगा। नियमावली के अनुसार प्राइवेट स्टूडेंटस को आवश्यक सारी सुविधाएं मिलेंगी बशर्ते उन्हें नियमित विद्यार्थियों की तरह कई अकेडमिक प्रक्रियाओं से गुजरने के बाद परीक्षा में बैठने की पात्रता मिलेगी। तब जाकर वे सेमेस्टर पद्धति से चारवर्षीय इंट्रीगेटेड स्नातक कोर्स कर पाएंगे।

तीस सितंबर को जारी स्वाध्यायी विद्यार्थी नीति के तहत शमक विश्वविद्यालय के भी विभिन्न कॉलेजों से प्राइवेट परीक्षा देने के लिए रजिस्ट्रेशन का नियम बनाया गया। नई नियमावली में प्राइवेट और अमहाविद्यालयीन शब्दों के लिए स्वाध्यायी(सेल्फ स्टडी) शब्द भी दिया गया है। प्रावधान के अनुसार कॉलेज में नियमित विद्यार्थियों के प्रवेश समाप्ति तारीख के बाद 20 दिन तक प्राइवेट स्टूडेंट्स का संबंधित विश्वविद्यालय द्वारा पंजीयन होगा। फिर उन्हें चयनित महाविद्यालय में समय–समय पर शैक्षणिक प्रक्रियाओं में भाग लेने होंगे। तब वे प्रथम सेमेस्टर परीक्षा फार्म भर सकेंगे। एक बार पंजीयन के बाद बार–बार पंजीयन की जरूरत नहीं होगी। अंकसूची में क्रेडिट सिस्टम से भी स्कोर दिए जाएंगे।

स्वाध्यायी विद्यार्थी नीति 2024 के अनुसार संबंधित महाविद्यालय द्वारा ऑफलाइन या ऑनलाइन शिक्षण सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। स्वाध्यायी विद्यार्थियों के लिए भी बीस–बीस अंकों की दो आंतरिक मूल्यांकन परीक्षाएं होंगी। इन दो में जिस आंतरिक परीक्षा में अधिक अंक होंगे उनके मार्क्स अंकसूची में जोड़े जाएंगे। इसके अतिरिक्त विद्यार्थी को एक असाइनमेंट भी जमा करना होगा। जिसके टॉपिक कॉलेज से मिलेंगे। इसके लिए 10 अंक निर्धारित किए गए हैं। यानी कुल 30(20 प्लस 10) अंकों की आंतरिक मूल्यांकन परीक्षा होगी और 70 अंकों की थ्योरी परीक्षा होगी।

जानकारी के मुताबिक सत्र के बीच प्राइवेट स्टूडेंट्स अपना अध्ययन और परीक्षा केंद्र परिवर्तित नहीं कर सकेंगे। प्रायोगिक विषयों में सेमेस्टर परीक्षा से 45 दिन पूर्व प्रायोगिक कक्षाएं और लैब कार्य कराई जाएगी। प्रायोगिक विषय में प्रत्येक प्राइवेट स्टूडेंट को 30 घंटे का प्रायोगिक लैब कार्य करने होंगे। जो कि एक क्रेडिट के बराबर होगा। नियमानुसार प्रायोगिक विषय में तीन क्रेडिट के थ्योरी पेपर है और एक क्रेडिट का प्रैक्टिकल है।

विद्यार्थियों के विषय को तीन कटेगरी– जेनरल इलेक्टिव(जीई), वैल्यू एडेड कोर्स(वीएसी) और स्किल इन्हैन्समेंट कोर्स(एसईसी) में बांटा गया है। जिसे विद्यार्थियों को स्वतः चुनने होंगे। इसके लिए महाविद्यालय द्वारा विषयों की विकल्प सूची दिया जाएगा। पूरे प्रदेश में इस बार बीए, बीएससी, बीकॉम, बीसीए, बीबीए इत्यादि कोर्स के प्रथम वर्ष में एनईपी 2020 के प्रावधान लागू किए गए हैं। एक विद्यार्थी तीन वर्ष का स्नातक करके दो वर्ष स्नातकोत्तर करेंगा। वहीं, दूसरे नियम में विद्यार्थी चार वर्षीय स्नातक कोर्स कर एक वर्ष का स्नातकोत्तर कर सकेगा। दी गई जानकारी के मुताबिक प्राइवेट विद्यार्थियों के लिए सामान्य दिनों के अतिरिक्त अवकाश के दिनों में भी कक्षाएं संचालित की जा सकेंगी। इसके लिए पंजीयन के बाद टाइम टेबल उपलब्ध कराई जाएगी।

ऑनलाइन क्लास की सुविधा के अतिरिक्त यूट्यूब पर सिलेबस के संबंधित मटेरियल मिलेंगे। पंजीयन के बाद संबंधित महाविद्यालय विद्यार्थियों को व्हाट्सअप से जोड़कर सूचना और अन्य सामाग्री उपलब्ध कराएगी। महाविद्यालय की नियमित कक्षाओं को ऑनलाइन भी उपलब्ध कराने का नियम बनाया गया है। उसकी रिकार्डिंग संबंधित महाविद्यालय के वेबसाइट पर या यूट्यूब पर उपलब्ध कराने की बात कही गई है। यह स्वाध्यायी नीति प्रदेश के सभी राजकीय विष्वविद्यालय और शासकीय महाविद्यालयों में रेगुलर और प्राइवेट विद्यार्थियों की शिक्षा में एकरूपता लाने के लिए तैयार की गई है।

सत्र में रेगुलर और प्राइवेट विद्यार्थियों का पंजीयन से लेकर परीक्षा तक लगभग साथ–साथ आयोजित किए जाने का नियम बनाया गया है। इससे नियमित और प्राइवेट के बीच मान्य धारणाओं में सकारात्मकता आएगी।

''स्वाध्यायी विद्यार्थी नीति 2024'' पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत शिक्षा को प्रभावी बनाने और प्रदेश में शिक्षा के स्तर को बढ़ाने के लिए छत्तीसगढ़ शासन ने यह नियमावली तैयार की है। अब प्राइवेट परीक्षा देना थोड़ा कठिन तो होगा पर यह नई व्यवस्था जरूरी था। अभी तक प्राइवेट परीक्षा देकर डिग्री लेना बहुत आसान माना जाता था।

इसलिए समाज प्राइवेट परीक्षा को कमतर नजरिए से देख रहा था। जिसमें एक दिन परीक्षा फार्म भरो और लगभग दस दिन परीक्षा में बैठकर एक वर्ष की कक्षा उत्तीर्ण कर लेने की परंपरा चली आ रही थी। उन्हें आंतरिक परीक्षाओं में उत्तीर्ण व असाइनमेंट कार्य करना होगा। तब जाकर परीक्षा में बैठकर कक्षा उत्तीर्ण कर पाएंगे। उन्हें ब्लेंडेड(ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों पद्धति) मोड से अध्ययन की सुविधा मिलेगी। नई व्यवस्था से प्राइवेट स्टूडेंट्स के ज्ञान का स्तर भी नियमित विद्यार्थियों सा होगा। समाज में पढ़ाई और डिग्री का महत्व और बढ़ेगा।

विश्वविद्यालय की स्वच्छता के लिए किए श्रमदान

विश्वविद्यालय सौंदर्य के लिए स्वच्छता अभियान में शामिल विवि परिवार

विवि। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती के अवसर पर विश्वविद्यालय में श्रमदान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें विवि अध्ययनशालाओं(यूटीडी) के साथ दंतेश्वरी कन्या पीजी कॉलेज, काकतीय महाविद्यालय, आत्मानंद मॉडल कॉलेज, बकावंड कॉलेज और तितिरगांव स्कूल के एनएसएस स्वयंसेवकों और विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया।

इस अवसर पर सुबह 08 से 10 बजे के बीच स्वयंसेवकों और विवि के अधिकारी व कर्मचारियों ने विवि कैंपस के विभिन्न स्थानों पर साफ–सफाई की। विद्यार्थियों ने स्वच्छता के लिए दो कदम बढ़ाने संबंधी नारे लगाए। गंदगी को जनलेवा बताते हुए स्वच्छता ही सेवा के जीवन मूल्य अपनाने की बात कही।

श्रमदान से पहले वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. शरद नेमा ने कहा कि हमें गांधीजी के संदेशों को अपने जीवन में आदर्श के रूप में अपनाना चाहिए। स्वच्छता को अपने स्वभाव और संस्कार का हिस्सा बनाना चाहिए। स्वच्छता के इस अभियान और विचारधारा को न केवल हम सभी अपने जीवन में अपनाएं बल्कि लोगों को भी इससे अवगत कराने का प्रयास करें। कुलसचिव अभिषेक कुमार बाजपेई ने राष्ट्रपिता को नमन करते हुए कहा कि सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, स्वच्छता जैसे गांधीजी के सिद्धांतों में एक भी अपना लेना जीवन को सार्थक कर देने जैसा होगा।

कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव के मार्गदर्शन में इस श्रमदान कार्यक्रम का नेतृत्व विवि एनएसएस समन्वयक डॉ. डीएल पटेल, पीजी कॉलेज एनएसएस अधिकारी चंद्रप्रकाश यादव ने किया।

इस अवसर पर प्रो. स्वपन कुमार कोले, डॉ. विनोद कुमार सोनी, केआर ठाकुर, विभिन्न अध्ययनशालाओं के अतिथि शिक्षक सहित अन्य ने श्रमदान कर युवाओं को स्वच्छता के प्रति प्रेरित किया। विद्यार्थियों ने छात्रावास के रास्ते सहित जगहों पर सफाई की। यह आयोजन शासन के स्वच्छता महाअभियान के तहत स्वच्छता ही सेवा पखबाड़ा के समापन कार्यक्रम के रूप में हुआ। विवि में कई कार्यक्रम का आयोजन हुआ।

वन विविधता को बेहतर बनाने की जरूरत : प्रो श्रीवास्तव

वन्य जीव सप्ताह के उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजित
कांगेर वैली उद्यान की टीम ने भी दी भागीदारी

विवि। 70वां राष्ट्रीय वन्य जीव सप्ताह के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय के वानिकी व वन्य जीव अध्ययनशाला में कांगेर वैली उद्यान टीम के सहयोग से चार अक्टूबर को ''वन्यजीव उजागर संरक्षण रणनीति की खोज'' विषय पर पैनल चर्चा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस परिचर्चा में अतिथि विचार उद्बोधन के साथ विवि के विभिन्न अध्ययनशालाओं के विद्यार्थियों ने टीम बनाकर पर्यावरण संरक्षण संबधी अपने विचार रखे।

''सेफगार्डिंग आवर नेचुरल हेरिटेज'' थीम पर हुई चर्चा में विवि के कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि वन्य जीवों के अन्तः संरक्षण एवं बाह्य संरक्षण तथा वन्यजीवों के प्राकृतिक रहवास में कमी आना चिंता का विषय है। पर्यावरण विघटन, ग्रीन हाउस इफेक्ट, पृथ्वी के तापमान में वृद्धि एक बड़ी समस्या बनकर सामने आयी है। इस संबंध में शीघ्र प्रभावी कदम उठाए जाने की जरूरत है। प्रो श्रीवास्तव ने छत्तीसगढ़ और अन्य राज्यों के वन व वन्य जीवों की तुलना करते हुए कहा कि प्रदेश में वन विविधता को और बेहतर बनाया जाना चाहिए।

यह काम जनजागरूकता से संभव है। हमें इस प्राकृतिक विरासत को बचाने की दिशा में कार्य करना चाहिए। विशिष्ट अतिथि के रूप में अपने विचार व्यक्त करते हुए तत्कालीन कुलसचिव अभिषेक कुमार बाजपेई ने कहा कि वन्य जीवन संरक्षण में समाज का योगदान बहुत आवश्यक है। समाज के युवा पर्यावरण की सुरक्षा में भागीदारी निभाएंगे तभी जैव विविधता संरक्षित होगी। आज इकोटूरिज्म स्वरोजगार का माध्यम बन रहा है। इसके लिए पर्यावरण संरक्षण जरूरी है।

कार्यक्रम के संयोजक व वानिकी व वन्य जीव अध्ययनशाला के प्रो. डॉ. शरद नेमा ने अपने परिचय और आभार उद्बोधन में कहा कि इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को इस विषय के संबंध में जागरूक करना है। डॉ. नेमा ने कहा कि भारत एक विकासशील देश है। वन क्षेत्र में कई विकास कार्य भी हो रहे हैं। उसकी भरपाई के लिए सरकार द्वारा कई काम भी किया जा रहा है। कई नीतियां और कानून बने हैं। संरक्षण की दिशा में जो गैप है उसकी भरपाई करना हम सबकी जिम्मेदारी है।

विद्यार्थियों ने अपने उद्बोधन में जीव हत्या, पेंगोलिन का अवैध तस्करी, पॉल्यूशन, वनों की कटाई, जंगल की आग जैसे विभिन्न विषयों पर अपनी बात रखी।

एमएससी माइक्रो बॉयोलॉजी की टीम में खुशबू, दीक्षा, आस्था ने अपने विचार रखे। एमएससी जियोलॉजी से प्रियांशू, श्रुति, उर्वशी और एमएससी जूलॉजी की टीम में भूमिका मौर्य, निर्मला व भूमिका टांडिया, शिवम ने भाग लिया। वानिकी अध्ययनशाला में आठ अक्टूबर तक वन्य जीव पर प्रश्नोत्तरी, कैम्प इत्यादि कार्यक्रम आयोजित किए गए।

कार्यक्रम को कांगेर वैली राष्ट्रीय उद्यान के वन्य जीव विशेषज्ञ श्री युगल जोशी एवं सुश्री सुमन भास्कर ने भी अपने विचार रखे। शासन के योजनाओं और प्रयासों की जानक. ारी दी। कार्यक्रम में वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. विना. `द कुमार सोनी, सहायक प्राध्यापक डॉ. संजी. वन कुमार, मैना मित्र समूह के सदस्य, अतिथि व्याख्याता डॉ. प्रीति दुबे, डॉ. दयानंद पैंकरा, प्रयोगशाला तकनीशियन बिपुल पॉल इत्त्यादि उपस्थित थे।

मानवता की रक्षा के लिए रक्तदान जरूरी

विवि। मानवता की सेवा के लिए युवा अब बिना संकोच सामने आ रहे हैं। समाज कार्य(एमएसडब्ल्यू) अध्ययनशाला एवं आरफा वेलफेयर फाउंडेशन के संयुक्त प्रयास से विवि में दस दिसंबर को ब्लड डोनर्स रजिस्ट्रेशन कैंप का आयोजन किया गया। इसमें विवि के विभिन्न विभागों के 105 युवाओं ने रक्तदान के लिए स्वैच्छिक रजिस्ट्रेशन कराया।

इसमें छात्राओं की संख्या ज्यादा रही। इस अवसर पर छात्र–छात्राओं का ब्लड समूह जांच कर उनका सम्पर्क नंबर रजिस्टर्ड किया गया। जरूरत पड़ने पर इन स्टूडेंट्स को ब्लड डोनेशन के लिए सम्पर्क किया जाएगा। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य 18 वर्ष की आयु पूरी करने वाले युवाओं को रक्तदान के महत्व से परिचित कराना और उन्हें पहली बार रक्तदान करने के लिए प्रोत्साहित करना था। इस दौरान उपस्थित विशेषज्ञों ने छात्र–छात्राओं को रक्तदान के फायदे बताने के साथ–साथ रक्त बढ़ाने के लिए खान–पान पर ध्यान देने की महत्वपूर्ण जानकारी भी दी। बताया कि रक्त और अच्छे स्वास्थ्य के लिए महंगे प्रोटीन इनर्जी लेने के बजाय घरेलु खाद्य पदार्थों का सेवन करना अच्छा होता है। चना और मूंगफली को भिंगो कर गुड़ के साथ खाना बहुत फायदेमंद रहता है।

जिस प्रकार 18 वर्ष की आयु में पहली बार वोट देने पर खुशी होती है उसी प्रकार किसी की जान बचाने के लिए पहली बार रक्तदान करने के बाद प्रसन्नता और आत्मसंतुष्टि मिलती है। मानवता की सेवा के लिए रक्तदान सर्वोत्तम कार्य है। रक्तदान के माध्यम से हम लोगों की जिंदगी बचा सकते हैं। रक्तदान हमारी सामाजिक जिम्मेदारी भी है। विवि परिवार के विद्यार्थी आवश्यकता पड़ने पर ब्लड के लिए फाउंडेशन और समाजकार्य अध्ययनशाला में संपर्क कर सकते हैं। इस मौके पर समाजकार्य अध्ययनशाला की विभागाध्यक्ष डॉ. सुकृता तिर्की, आरफा वेलफेयर फाउंडेशन की निर्देशिका महफूजा हुसैन, अतिथि व्याख्याता डॉ. तूलिका शर्मा, एलिस एंजिल तिर्की, श्रद्धा डोंगरे, तनीषा दास मौजूद रहीं। आयोजन में एमएसडब्ल्यू स्कूल ऑफ स्टडी के छात्र–छात्राओं ने सक्रिय भागीदारी दी।

विवि के 105 स्टूडेंट्स ने कराया रजिस्ट्रेशन, छात्राओं की संख्या रही ज्यादा

मानसिक स्वास्थ्य के लिए जीवनशैली में सुधार बहुत जरूरी

कैंपस न्यूज। विवि के मनोविज्ञान अध्ययनशाला द्वारा मानसिक स्वास्थ्य पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता असिस्टेंट प्रोफेसर अलका केरकेट्टा ने कहा कि आज व्यस्तम जीवनशैली में मानसिक रूप से स्वस्थ बहुत कम लोग हैं।

हमें इसके लिए अपने जीवन शैली में सुधार करना होगा। तभी हम स्वस्थ हो पाएंगे। कार्यक्रम में शाला प्रमुख डॉ. सुकृता तिर्की उपस्थित रहीं। कार्यक्रम का संचालन अतिथि व्यख्याता नीलम साहू ने किया।

मानसिक स्वास्थ्य कार्यशाला को संबोधित करती विभागाध्यक्ष डॉ. सुकृता तिर्की

इतिहास के विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय संगोष्ठी में लिया भाग

विवि न्यूज। महंत घासीदास स्मारक संग्रहालय में 21 से 23 दिसंबर तक छत्तीसगढ़ में कला और वास्तुकला विषय पर सेमीनार का अयोजन किया गया।

इसमें शमक विवि इतिहास विभाग के फैकल्टी डॉ भेनु एवं परास्नातक के विद्यार्थियों ने भी भाग लिया। विवि की टीम ने विभिन्न विषयों पर शोध पत्र भी प्रस्तुत किए। इस दौरान विद्यार्थियों को प्रदेश के इतिहास इत्यादि की विस्तृत जानकारी मिली। उपस्थित विद्वानों ने शमक विवि के फैकल्टी और विद्यार्थियों के प्रयासों की सराहना भी की।

भाषा हमारे दिलों को जोड़ती है : डॉ. लालवानी

छत्तीसगढ़ी राजभाषा दिवस पर हुए विविध कार्यक्रम

विवि। कला संकाय एवं सामाजिक विज्ञान संकाय द्वारा संयुक्त रूप से छत्तीसगढ़ी राजभाषा दिवस मनाया गया। विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित कुलसचिव डॉ.राजेश लालवानी ने अपने वक्तव्य छत्तीसगढ़ी में दिया। उन्होंने कहा कि एक माँ अपना पहला संवाद अपने बच्चे से मातृभाषा में ही करती है। छत्तीसगढ़ी भाषा हम सबकी मातृभाषा है। इसमें हमारी हजारों वर्षों की ज्ञान परंपरा का संचय है। इसमें अनेक बोलियाँ आती हैं। जब से छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण हुआ है तब से लगातार हमारा प्रांत संयुक्त रूप से एकजुट होकर आगे बढ़ रहा है। हम जहां भी जाते हैं अपनी छत्तीसगढ़ी बोली भाषा से सबको प्रभावित कर देते हैं। उन्होंने कहा कि भाषा हमें आपस में जोड़ने का कार्य करती है।

इस अवसर पर वरिष्ठ प्रो. शरद नेमा छत्तीसगढ़ी भाषा में विचार व्यक्त करते हुए कहा कि देशी भाषा बोलियों में बात करने में जो आनंद है वह किसी अन्य भाषा संस्कृति में नहीं दिखाई देती है। अतः हमें अपनी बोली भाषा पर गर्व करना चाहिए। छत्तीसगढ़ हल्बी, गोंडी, भतरी आदि सैकड़ों बोलियों का केंद्रस्थल है। जहां से हम अपनी परंपरा व विरासत को देख और प्राचीन ज्ञान–विज्ञान को समझ पाते हैं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही हिन्दी विभाग की अध्यक्ष डॉ. सुकृता तिर्की ने कहा कि भारत में अनेक बोलियाँ एवं भाषाएं हैं उनमें छत्तीसगढ़ी भाषा बहुत मधुर और सुंदर है। इस भाषा में अनेक बोलियों एवं भाषाओं के शब्द समाहित हैं। डॉ तिर्की ने भाषा एवं बोलियों के वर्गीकरण के बारे में विचार रखते हुए कहा कि अवधी, बघेली तथा छत्तीसगढ़ी बोलियाँ भाषाई . दृष्टि से पूर्वी हिन्दी के अंतर्गत आती हैं। भाषा में विचार एवं संस्कार समाहित होते हैं। इस अवसर पर विश्वविद्यालय में भाषण, पेंटिंग, क्विज, वाद–विवाद, छत्तीसगढ़ी कविता एवं गीत इत्यादि प्रतियोगिता का आयोजन किया गया और छात्र– छात्राओं को पुरस्त किया गया।

माइक्रोप्लास्टिक कचरे का सबसे बड़ा स्रोत घरेलु कार्यः प्रो. दास

ठोस अपशिष्ट प्रबंधन विषय पर कार्यशाला आयोजित

विवि। शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय, बस्तर में 04 जनवरी को ठोस अपशिष्ट प्रबंधन और अपशिष्ट जैविक संसाधन–वेल्थ और ग्रीन अक्षय उर्जा के स्रोत के रूप में विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में विषय विशेषज्ञ के रूप में सेषाद्रिपुरम फर्स्ट ग्रेड कॉलेज, बेंगलुरू में बायोटेक्नालॉजी के विभागाध्यक्ष व पर्यावरणविद् प्रो. सांतनु दास ने इस समस्या के कारण, परिणाम और निदान को लेकर अपने विचार रखे। कार्यशाला में विश्वविद्यालय के फैकल्टी और स्टूडेंट्स ऑनलाइन भी जुड़े।

इस अवसर पर प्रो. दास ने कहा प्लास्टिक जैसे ठोस अपशिष्ट को लेकर देश के सभी शहर चिंतित तो हैं पर इंदौर जैसे कुछ शहर ही इसे लेकर ईमानदारी से प्रयास कर रहे हैं। इंदौर इस दिशा में पथ प्रदर्शक का काम कर रहा है। ठोस अपशिष्ट को लेकर समाज और अन्य इकाई बोलते कुछ हैं और करते कुछ और हैं। केवल कंक्रीट के जंगल बनाने में लगे हैं। प्लास्टिक के समुद्र बना रहे हैं।

हमलोग सुबह से लेकर शाम तक प्लास्टिक और अन्य ठोस अपशिष्ट फैलाने का काम करते हैं। यहां तक कि हम किसी भी सुझाव को नहीं मानते हैं। कहीं भी कोई भी ठोस अपशिष्ट कचरा फेंक देते हैं।

प्रो. दास ने बताया इंडस्ट्री, हॉटल, हॉस्पिटल इत्यादि ठोस कचरे के स्रोत हैं पर घरेलु कार्यों से सबसे अधिक ठोस अपशिष्ट सामने आ रहे हैं। समाज में माइक्रो प्लास्टिक सबसे बड़ी समस्या है। ये माइक्रो प्लास्टिक सबसे अधिक घरेलू कार्यों से उत्पन्न हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि अपशिष्ट को जलाने में न केवल कई रासायनिक पदार्थ धरती में जा रहे है बल्कि हवा प्रदूषित हो रही है। इससे खेती भी प्रभावित हो रही है। प्लास्टिक के कचरे को डिस्कम्पोज होने में सबसे अधिक समय लगता है। आज मौसम में नकारात्मक परिवर्तन के लिए ठोस अपशिष्ट के डम्पसाइट तीसरे बड़े कारण बन रहे हैं। अपशिष्ट को डम्पसाइट तक पहुंचाने में ही 350 करोड़ रूपए व्यर्थ खर्च हो रहे हैं।

प्रो. दास ने कहा कि ई वेस्ट प्रबंधन, सोलर पैनल विस्तार, ग्रीन वारियर, इको क्लब के प्रयास अच्छे होंगे पर यदि घर के बच्चे को ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के प्रति जागरूक किया जाए तो बेहतर परिणाम आएंगे। अब ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के लिए कुछ करने का समय आ गया है। इसे लेकर लोगों को जागरूक करना हम सभी का कर्तव्य है। कचरे को लाभकारी बनाने के प्रयास करने होंगे।

कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि ठोस अपशिष्ट एक अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण समस्या है। विद्यार्थियों को इस समस्या के प्रति जागरूक होना जरूरी है। हमें सस्टेनेबल डेवलपमेन्ट के प्रयास करते रहना होगा जिससे स्वास्थ्य सुरक्षा एवं हरियाली सतत रूप से बनी रहे स इससे पहले स्वागत उद्बोधन में कार्यशाला समन्वयक प्रो शरद नेमा ने कार्यक्रम के उद्देश्यों पर विचार रखे।

मौके पर कुलसचिव डॉ. राजेश लालवानी, डॉ. विनोद कुमार सोनी, डॉ. सजीवन कुमार, डॉ. संजय डोंगरे उपस्थित थे। कार्यशाला में डॉ. प्रीति दुबे, डॉ. दयानंद साय पैकरा, डॉ. गुरप्रीत सिंह सौंध, डॉ. राकेश कुमार खरवार, विमलेश साहू ने सक्रिय सहयोग किया।

अतिथि व्याख्याताओं से मिले उच्च शिक्षा सचिव श्री प्रसन्ना आर.

विवि। विवि आए उच्च शिक्षा सचिव श्री प्रसन्ना आर. ने अतिथि व्याख्याताओं से भी करीब एक घंटे बातचीत की। इस दौरान विवि के अतिथि शिक्षकों ने उन्हें अपनी वर्तमान एकेडमिक स्थिति से अवगत कराया। मानदेय, अतिरिक्त क्लास, अनुभव प्रमाणपत्र, जॉब सेक्यूरिटी, छुट्टी सहित अन्य विषयों पर चर्चा हुई। विभिन्न राज्यों में आतिथि शिक्षकों के लिए लागू नियमावली से भी सचिव महोदय को अवगत कराया गया। कई मांगों पर सहमति व्यक्त करते हुए सचिव महोदय ने विषय को आगे बढ़ाने का आश्वासन दिया। इस स्नेह मुलाकात के लिए अतिथि शिक्षकों ने आभार जताया।

शैक्षणिक संस्थानों में सांस्कृतिक वातावरण निर्मित करने में हिंदी विभाग का महत्वपूर्ण योगदान : डॉ. मोतीवाला

विश्व हिंदी दिवस पर अध्ययनशाला द्वारा व्याख्यान कार्यक्रम आयोजित
अतिथि व्याख्याता ने किया काव्यपाठ

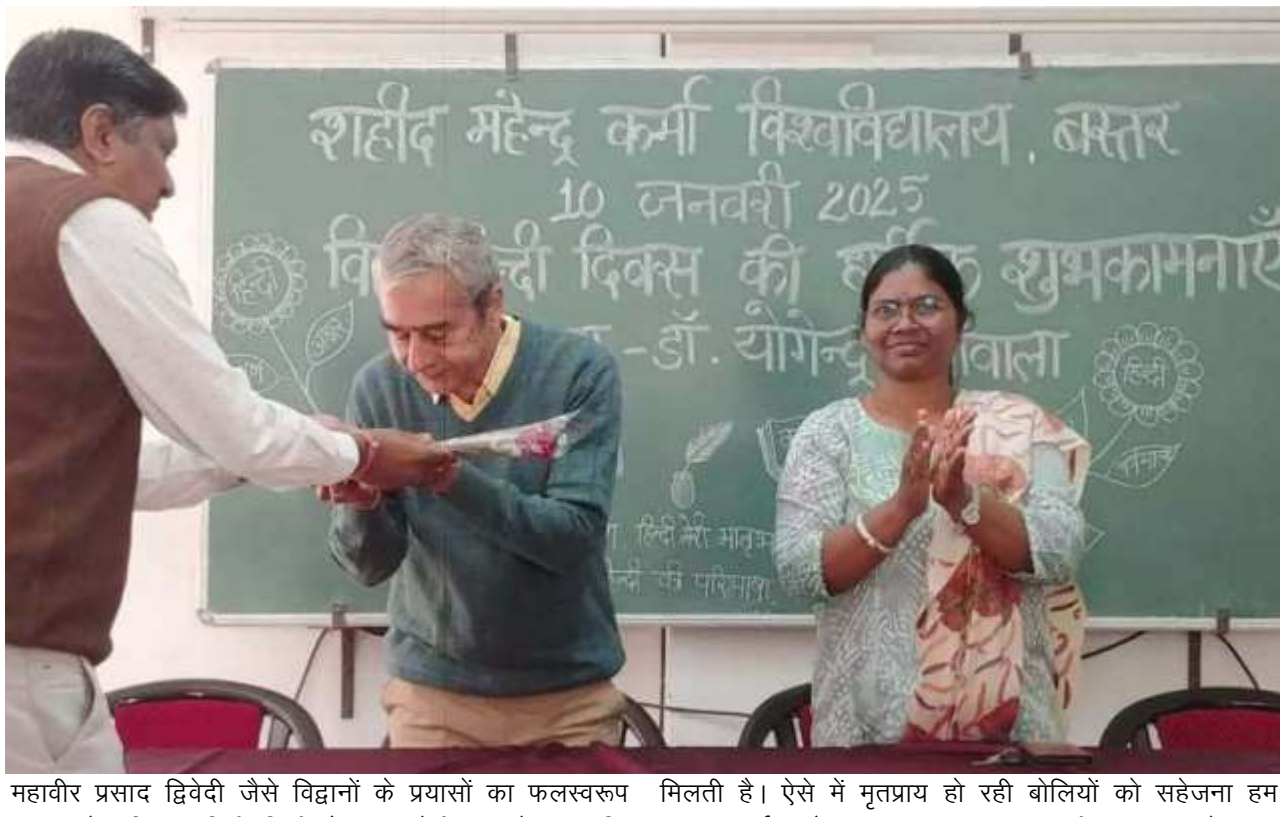

विश्वविद्यालय परिसर समाचार। विश्व हिंदी दिवस के अवसर दस जनवरी को हिंदी अध्ययनशाला द्वारा व्याख्यान का आयोजन किया गया। हिंदी की वैश्विक परिदृश्य विषय पर आयोजित इस व्याख्यान के प्रमुख वक्ता शासकीय दंतेश्वरी स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, जगदलपुर के सहायक प्राध्यापक डॉ. योगेंद्र मोतीवाला थे।

डॉ. मोतीवाला ने कहा कि हमारे विचारों पर भाषा का बहुत बड़ा प्रभाव पड़ता है। भाषा व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण भाग है। भाषा से आपका व्यक्तित्व प्रदर्शित होता है। इसी कारण राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी भाषा प्रवीणता पर जोर दिया गया है। प्रभावी अभिव्यक्ति के लिए भाषा में निष्णात होने की बात की गई है। भाषा हमारी संस्कृति को मजबूत करती है। आजादी के आंदोलन में हिंदी की भूमिका जगजाहिर है। जब अंग्रेजी सभी भारतीय भाषा और बोलियों के अस्तित्व खत्म करने के प्रयास कर रही थी वैसे समय में हिंदी आम जन की भाषा के रूप में उभरकर अंग्रेजी लैंग्वेज का राष्ट्रीय स्तर पर सामना किया।

डॉ. मोतीवाला ने कहा कि हिंदी के विकास में ब्रह्म समाज, आर्य समाज, थियोसोफिकल सोसाइटी, काशी नागरी प्रचारिणी सभा, प्रयाग हिंदी साहित्य सम्मेलन, वर्धा आश्रम जैसे संस्थानों ने बहुत बड़ा योगदान दिया था। पुरूषोत्तम दास टंडन, महावीर प्रसाद द्विवेदी जैसे विद्वानों के प्रयासों का फलस्वरूप आज हमें परिष्कृत हिंदी मिली है। डॉ. मोतीवाला ने कहा कि किसी भी उच्च शैक्षणिक संस्थान में हिंदी विभाग सांस्कृतिक वातावरण निर्मित करने में महत्वपूर्ण योगदान देता है। व्याख्यान में अध्ययनशाला की प्रमुख डॉ. सुकृता तिर्की ने कहा कि भाषा और बोली हमें हजारों वर्षों के बाद समृद्ध होकर मिलती है। ऐसे में मृतप्राय हो रही बोलियों को सहेजना हम सबका कर्तव्य है। सह प्राध्यापक डॉ. सजीवन कुमार ने कहा कि भाषा हमारी संस्कृति की पहचान होती है। हमें हृदय से सम्मान करना चाहिए। इस अवसर पर डॉ. विष्णु प्रताप सिंह ने काव्यपाठ किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. रविंद्र यादव ने और डॉ. मनीषा देवी ने आभार प्रदर्शन किया।

राष्ट्रीय सेवा योजना के 55वां स्थापना दिवस पर उपस्थिति अतिथि

ज्ञानार्जन के साथ एक अनुपात में सेवा कार्य भी जरूरी

विवि। राष्ट्रीय सेवा योजना का 55वीं स्थापना दिवस पर एनएसएस इकाई द्वारा मनाया गया। मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि भय और अज्ञानता के साथ अहंकार हमारे प्रगति का सबसे बड़ा बाधक है। अहंकार सहज मनःस्थिति भी है पर इस अहंकार रूपी बाधा हो हम सेवा कार्य जैसे सरल रास्ते से तोड़ सकते हैं। सेवा कार्य समाज के लिए जितना लाभकारी है उसके ज्यादा महत्वपूर्ण सेवा कार्य करने वाले के लिए है।

चरित्र निर्माण में सेवा कार्य का महती भूमिका होती है। व्यक्ति के लिए ज्ञान का धारण करने, व्यवहारिक जीवन उसका उपयोग करने के साथ–साथ सेवा कार्य भी एक अनुपात में जरूरी है। सकाम कर्म स्वयं, परिवार, समाज व देश के लिए आवश्यक है। प्रो. श्रीवास्तव ने कहा कि एनएसएस एक विचारधारा है। इसके माध्यम से युवा समाज से जुड़कर एकाग्रता पाते हैं। विवि के एनएसएस इकाई के संयोजक डॉ. सजीवन कुमार ने अपने स्वागत उद्बोधन में कहा कि एनएसएस युवाओं को समाज से जोड़ने का अवसर देता है। इसके माध्यम से युवा निस्वार्थ भाव से समाज सेवा करते हैं और अपने समाज, परिवार व देश के लिए कार्य में सक्षम हो जाते हैं। एनएसएस व्यक्तित्व विकास की बात करता है। डॉ. सजीवन सर ने बताया कि विवि द्वारा पास के पांच गांव में सेवा कार्य किया जा रहा है। साथ ही उसके करीब 200 एनएसएस यूनिट समाज में स्वाथ्य, शिक्षा, स्वच्छता सहित कई सामाजिक समस्याओं को सामने लाने का कार्य कर रहे हैं। कार्यक्रम का संचालन डॉ भुनेश्वर लाल साहू ने किया। इस अवसर पर वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. एसके कोले, डॉ. एएन मिश्रा, डॉ. सुकृता तिर्की, पर्वतारोही नैना ठाकुर इत्यादि उपस्थित थे।

शिक्षा की स्थिति स्पष्ट करने सही डाटा जरूरी : डॉ. बाजपेई

आईसा के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

विवि। विश्वविद्यालय में 02 जनवरी को अखिल भारतीय उच्चतर शिक्षा सर्वेक्षण(एआईएसएचई–ऐश) के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें संभाग के विभिन्न शासकीय और अन्य महाविद्यालयों के 44 नोडल अधिकारियों ने हिस्सा लिया।

इस अवसर पर राज्य उच्च शिक्षा विभाग के नोडल अधिकारी डॉ. नीता बाजपेई ने कहा कि भारत सरकार वन नेशन बन डेटा की ओर बढ़ रही है। इसके लिए हमें शिक्षा विभाग के डाटा को सूक्ष्मता और प्रमाणिकता के साथ भरना है। जिससे राज्य में शिक्षा की वास्तविक स्थिति स्पष्ट हो सके। उसके आधार पर इस क्षेत्र और बेहतर प्रयास कर सकें। कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि ऐश सर्वेक्षण के डेटा के आधार पर पूर्व में निर्धारित शिक्षा नीति में आवश्यक और बेहतर प्रावधान जोड़े जाते हैं। डेटा के आधार पर सुधार और संशोधन किए जाते हैं।

प्रो श्रीवास्तव ने बताया कि वर्तमान की केंद्र सरकार ने 2010–11 से चल रहे इस सर्वेक्षण के आधार पर ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कई नियम बनाए हैं। हर वर्ष की रिपोर्ट के आधार पर शैक्षणिक स्थिति के ट्रेंड को समझा गया। सभी कॉलेजों के अधिकारी को इस सर्वे के रिपोर्ट को डाउनलोड कर पढ़ना चाहिए। हम डेटा को बढ़ाकर शिक्षा के क्षेत्र में वृद्धि नहीं कर सकते हैं। हमें इंटरनेशनल डेटा और इंडेक्स के आधार अपने देश की शिक्षा स्थिति की तुलना करनी चाहिए। तकनीकी सत्र के रिसोर्स पर्सन श्री विकास पंचाक्षरी ने पावर प्वाइंट प्रजेंटेशन के माध्यम से वास्तविक डाटा को भरने के तकनीकी पक्षों की जानकारी दी। प्रवेश, जाति वर्ग, परीक्षा, दिव्यांगता, स्टॉफ जानकारी जैसे विभिन्न जानकारी अपलोड करने की सावधानियां बताई।

श्री विकास ने एनईपी 2020, एनएचइक्यूएफ, एनसीसीएफ, आरडीसी, एनआईआरएफ, एमओयू, स्वयम पोर्टल को लेकर भी डाटा भरने के नियम बताए। इससे पहले अपने स्वागत उद्बोधन में विवि ऐश प्रकोष्ठ के अध्यक्ष प्रो. शरद नेमा ने कहा कि हमें इस सर्वेक्षण में वास्तविक डाटा को सतर्कता और ईमानदारी से भरना होता है। इसी से संस्था की सही स्थति की जानकारी मिलती है। प्रशिक्षण में कुलसचिव डॉ राजेश लालवानी और विवि के नोडल अधिकारी(ऐश) डॉ. विनोद सोनी उपस्थित थे। संचालन डॉ. दिलेश जोशी ने किया।

ज्ञात हो कि देश में उच्च शिक्षा की स्थिति की जानकारी प्राप्त करने के लिए अखिल भारतीय उच्चतर शिक्षा सर्वेक्षण(ऐश) केंद्र सरकार का प्रयास है। सत्र 2010–11 से यह ऑनलाइन वार्षिक सर्वेक्षण प्रारंभ हुआ है। इसके माध्यम से संस्थानों की संख्या, प्रकार, छात्र–छात्राओं का सकल नामांकन अनुपात, शिक्षक की उपलब्धता, परीक्षा परिणाम, बुनियादी ढ़ांचे, वित, जेंडर, जैसे कई मापदंडों पर डेटा एकत्र किए जाते हैं। इसके आधार पर शिक्षा के क्षेत्र में नीतिगत निर्णय और अनुसंधान कार्य किए जाते हैं। इसके परिणाम बेहतर आते हैं।

कार्यपरिषद् की बैठकः विद्यार्थियों के हित में लिए कई निर्णय

कम किए गए परीक्षा फीस कैंटीन प्रारंभ करने हुई चर्चा विभिन्न क्लब स्थापना के लिए भी हुए निर्णय

विश्वविद्यालय में प्रस्तावित मुख्यद्वार लेआउट के अनुसार लगभग तैयार हो गया है।

विश्वविद्यालय समाचार। शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय, बस्तर में दस दिसंबर को कार्यपरिषद् की बैठक आयोजित की गई। बैठक में कार्यपरिषद् सदस्यों की उपस्थिति में विश्वविद्यालयीन गतिविधियों से संबंधित कई प्रमुख बिंदुओं पर निर्णय लिए गए।

पिछले दिनों फीस शुल्क में सुधार के लिए विधायक किरण सिंह देव के संबंधित पत्र एवं विद्यार्थियों की मांग पर विचार करते हुए कार्यपरिषद् ने निर्धारित नवीन परीक्षा फीस को कम कर दिया है। कई पाठ्यक्रमों में फीस वृद्धि न करने का निर्णय लिया गया है। कम्प्यूटर आधारित पाठ्यक्रम जैसे बीसीए, एमसीए और पीजीडीसीए के परीक्षा शुल्क को वृद्धि से पूर्व के अनुसार यथावत रखा गया है। फीस को लेकर विधायक श्री किरण सिंह देव ने पत्र में लिखा था कि जनजातीय क्षेत्र को ध्यान में रखकर विवि शुल्क संरचना में इस प्रकार सुधार कर फीस कम कर दिया जाए कि विद्यार्थी बिना दिक्कत के भुगतान कर सकें और विवि को भी आर्थिक दिक्कतों का सामना न करना पड़े।

पीएचडी के कोर्स वर्क में यूजीसी के गाईडलाइन के अनुसार संशोधित पाठ्यक्रम को 12 क्रेडिट का बनाया गया है। इसे विवि के दस शोध केंद्रों में लागू किया जाएगा। इसकी स्वी.ति कार्यपरिषद् ने दी है। दो पीएचडी शोधार्थियों को डिग्री प्रदान करने का निर्णय लिया गया। कार्यपरिषद् ने सिविल सेवा और चिकित्सा परिचर्या को अंगी.त करते हुए अनेक कर्मचारियों को चिकित्सीय उपचार हेतु सहायता राशि प्रदान करने का निर्णय लिया। कार्यपरिषद् ने राज्य सरकार द्वारा स्वी.त 2024–25 में खुले नए पाठ्यक्रमों में 200 शैक्षणिक और 165 अशैक्षणिक पदों के रोस्टर निर्माण एवं गैर शैक्षणिक पदों की भर्ती नियम तैयार करने हुत समिति गठन करने का निर्णय लिया गया।

विवि के समस्त कर्मचारियों व अधिकारियों को 01 अक्टूबर 2024 से महंगाई भत्ते में चार प्रतिशत वृद्धि को मान्य किया गया। कार्यपरिषद् द्वारा सत्र 2024–25 से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत लागू स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के तृतीय और चतुर्थ सेमेस्टर पाठ्यक्रम को भी एनईपी के अनुरूप तैयार कर लागू करने का निर्णय लिया गया है। सत्र 2023–24 के लिए पांचवें दीक्षांत समारोह को फरवरी 2025 में आयोजित करने का निर्णण लिया गया है।

समारोह में मानद उपाधि के लिए कुल. पति महोदय को अधि.त किया गया है कि वे माननीय कुलाधिपति महोदय से निर्देश प्राप्त कर कार्यवाही करेंगे। साथ ही विवि में कैंटीन प्रारंभ करने का निर्णण लिया गया है। इस तथ्य का संज्ञान लिया कि अधिकतर विद्यार्थी दूरस्थ स्थान जैसे सुकमा, बीजापुर से आते हैं। उन्हें अधिक राशि देकर भोजन प्राप्त करने में कठिनाई होती है। अतः विवि एनएमडीसी जैसी संस्थाओं से सम्पर्क कर छात्रों को भोजन क्रय करने हेतु सब्सिडी दिलाने का प्रयास करे। जिसके आधार पर स्टूडेंट्स को कैंटिन में किफायती दर में रूपए में भोजन की थाली मिल सके। विवि में गत दिनों कई गतिविधियां प्रारंभ हुई है। जिसमें योग व ध्यान क्लब, सांस्कृतिक क्लब, स्पोर्ट्स क्लब, संस्.त एवं भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्र और पर्यावरण व उर्जा संरक्षण क्लब की स्वीकृति दी गई।

शमक विवि का स्टॉल रायपुर राज्योत्सव में

मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने विश्वविद्यालय के प्रदर्शनी स्टॉल का किया अवलोकन

विवि संवाददाता। छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना के 24 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में राजधानी रायपुर में राज्योत्सव का आयोजन किया गया। नवा रायपुर, अटल नगर परिक्षेत्र में उच्च शिक्षा विभाग द्वारा लगाए गये प्रदर्शनी डोम में शमक विवि का भी स्टॉल लगाया गया है।

इस दौरान मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने बस्तर विश्वविद्यालय के प्रदर्शनी स्टॉल का अवलोकन किया। मुख्यमंत्री जी ने विवि की एकेडमिक गतिविधियों से संबंधी फ्लेक्स और कालीपुर में प्रस्तावित विवि के नए भवन के बिल्डिंग मॉडल की सराहना की। विवि के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. सजीवन कुमार ने इस दौरान जनजातीय विद्यार्थियों के लिए बहुविषयी शिक्षा, शोध की स्थिति, विकास के आगामी योजनाओं और क्रियान्वयन प्रक्रिया से मुख्यमंत्री श्री साय को अवगत कराया।

मुख्यमंत्री जी के अवलोकन के दौरान उच्च शिक्षा विभाग के सचिव श्री प्रसन्ना आर सहित अन्य जनप्रतिनिधि व अधिकारी मौजूद थे। विवि की ओर से वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. विनोद सोनी और अतिथि व्याख्याता राहुल सिंह, पूजा ठाकुर व श्रद्धा डोंगरे ने राज्योत्सव में भागीदारी दी। बस्तर विवि के स्टॉल अवलोकन के लिए कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव सहित विवि परिवार ने मुख्यमंत्री जी और सभी जनप्रतिधियों के प्रति आभार जताया है। आगामी साल और बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शनी लगाने का प्रयास किया जाएगा। ज्ञात हो कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और पीएम उषा योजनांतर्गत बस्तर क्षेत्र के जनजातीय छात्र–छात्राओं के बेहतर उच्च शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए शहीद महेंद्र कर्मा विवि को 100 करोड़ रुपये बजट प्रावधान किया गया है। इसके माध्यम से न केवल विवि के इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार किया जाएगा बल्कि क्षेत्र में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अध्ययन और शोध की नई व्यवस्था शुरू करने का प्रयास किया जा रहा है।।

राज्योत्सव में लगे स्टॉल को जनप्रतिनिधियों, प्रशासनिक अधिकारियों के साथ आम दर्शकों ने भी खूब सराहना की।

विचार

लक्ष्य कभी दो नहीं हो सकते और रास्ता कभी एक नहीं हो सकता।
– अज्ञात

स्वच्छता संकल्प पूरा करने किए हस्ताक्षर

विवि। स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा के तहत विश्वविद्यालय में वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. शरद नेमा ने उपस्थित विद्यार्थियों को स्वच्छता की शपथ दिलायी। सभी ने हर वर्ष सौ घंटे यानी प्रति सप्ताह दो घंटे स्वच्छता के लिए श्रमदान कर भारत मॉ की सेवा कर्तव्यों का दोहराया और राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के सपनों का स्वच्छ भारत बनाने का संकल्प लिया। विद्यार्थियों और विवि कर्मियों ने स्वच्छता संकल्प के हस्ताक्षर भी किए। इस दौरान विवि के तत्कालीन कुलसचिव अभिषेक कुमार बाजपेई व अन्य उपस्थित थे।

संरक्षक
कुलपति – प्रो मनोज कुमार श्रीवास्तव
कुलसचिव– डॉ. राजेश लालवानी
जनसंपर्क समन्वयक एवं संपादक
डॉ. विनोद कुमार सोनी
मार्गदर्शन
डॉ. संजय कुमार डोंगरे
(लाईब्रेरियन एवं विभागाध्यक्ष, पत्रकारिता विभाग)
संपादन सहयोग : निरंजन कुमार
विद्यार्थी उपसंपादक– संतोष कुमार वर्मा
पता– पत्रकारिता विभाग, एमसीए बिल्डिंग, कालीपुर
एसएमके विवि, बस्तर 494001
ईमेल– smkvbastarsm@gmail.com
मोबाईल नं–7587096232
वेबसाइट– www.smkvbastar.ac.in
ई न्यजलेटर वेबसाइट से डाउनलोड हेतु उपलब्ध